सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - स (३ दा १)

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

७८६ (सत्त सौ छिआसी) : सत्त अठ्ठ पंदरां ते छे इक्कीआं दी रासी, मुहम्मद दा लहणा गोबिन्द नाल पूरा कराईआ। (२८ अस्सू स शं ६)

शस्त्र : जिस दे पिच्छे दे के आए कुरबानी, शस्त्र खण्डा कमान कंध उठाईआ। (२६ हाढ़ श सं ६) (हथिआर)

शास्त्र : मैं सनेहुड़ा दे दे लिखाई जगत किताब, शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी अञ्जील कुरान नाम धराया। (१२ मध्घर २०१८ बि) गुर अवतार सारे कहण, शास्त्र सिमरत देण गवाहीआ। निहकलंक प्रगट होए सृष्ट सबाई साक सज्जण सैण, नौं नौं वेखे थाउँ थाईंआ। (१ विसाख २०१८ बि) (धारमक गरंथ)

सहस : सतिगुर शब्द कहे मेरी अगम्मी मनसा, बिन मन मत बुध प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त वेस वटावां सहँसा, रूप अनूप खेल खिलाईआ। (२४ चेठ २०२१ बि) जिस दी सिफ्त गावे बाशक मुख सहँसी, धुर दा राग अलाईआ। (१ अस्सू २०२१ बि) (बेसुमार)

सहज : इक्को पारब्रह्म नाल मिल गई अन्तर आत्म जोती, परमात्म मेला सहज सुभाईआ। (२७ जेठ २०२१ बि) जिस वेले सहज सुभाओ काया मन्दर अन्दर वड़ें मारें इक्क खंघूरा, ओस वेले अनहद वज्जे चाईं चाईंआ। (२५ हाढ़ २०२१ बि)

सहिब : साचा साहिब वसे जीव अन्दर, अलोकक आत्म वेख नैण बलोए। महाराज शेर सिँघ कलिजुग प्रगट निहकलंक नाउँ रखाए। (१ वसाख २००८ बि) साचा प्रभ सच्चा साहिब। साचा गुर गम्भीर गहर। साचा प्रभ सच निरवैर। सच्चा प्रभ अमृत बख्शे कर जाए मेहर। (१ माघ २००८ बि)

सहिबजादा : साहिबज़ादा एका सुत, लक्ख चुरासी जगत लोकाईआ। (२६ पोह २०१७ बि)
साहिबज़ादा इक्क सपुत्तर, पुत्र ना कोई प्यारा। करे खेल आप बचित्र, चित्र नज़र ना आवे कोई संसारा। (२६ पोह २०१७ बि)
एका सुत शब्द धार, गोबिन्द नाउँ प्रगटाया। (२६ पोह २०१७ बि)

सच कर्म : सच कर्म सच माणो रस। सच कर्म हरि जोत जगाए, गुरसिख आओ नस्स। सच कर्म हरि सोए जगाए, गुरसिख साचे होवे वस, सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां राह जाए दस्स।
सच कर्म रस भोगी। सच कर्म गुरसिख ना होए कदे विजोगी। सच कर्म सच धर्म साचा रस विच्च मात दे भोगी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप चुगाए सोहँ चोगी।
सच कर्म मुख बोलो सच। सच कर्म ना झूठ विहाजो कच्च। सच कर्म प्रभ दर आए ना जाणा नच्च। सच कर्म अगन तृष्ना विच्च ना जाणा मच्च। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लिखाए सच्चो सच।
सच कर्म सच शब्द कमावणा। सच कर्म हरि धाम सुहावणा। सच कर्म हरि सोहँ साचा जाम पिलावणा। सच कर्म एका साचा नाम दवावणा। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर संगत गुरसिख भैण भरा बणावणा।
सच कर्म सीतल सति। सच कर्म प्रभ आत्म देवे साची मत। सच कर्म गुरसिख तेरा कदे ना टुट्टे यत। सच कर्म माया लालच ना पीणी झूठी रत्त। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे जाणे गुरसिखां घट घट।

सच कर्म कल सच संदेश। प्रभ अबिनाशी गुरसिख साचे विच्च प्रवेश। पंचम जेठ जोत सरूपी कीआ वेस। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप पलटिआ आपणा भेस।
सच कर्म भरत भउ भागे। सच कर्म गुरसिख सोया प्रभ दर जागे। सच कर्म प्रभ अबिनाशी धोए आत्म दागे। सच कर्म आप उपजाए अनहद साचे रागे। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां आत्म साधे।
सच कर्म ना मंगो भिख। सच कर्म प्रभ पंचम जेठ जाए लिख। सच कर्म हरि रसना गाओ लाहो आत्म विख। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख उपजाए जिउँ कँवल बिरख।
सच कर्म सर्ब घर वरते। जो जन आए साचे दर ते। सच कर्म हरि भरम निवरते। सच कर्म गुरसिख साचे कलिजुग तरते। सच कर्म वेले अन्त नहीउँ डरते। सच कर्म प्रभ दा भाणा सिर ते जरते। सच कर्म आप वसाइण हरि साचा दर ते। सच कर्म महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आपे वरते। (५ जेठ २०१० बि)
गुर संगत साचा कर्म कमाउणा। मदिरा मास हत्थ ना लाउणा। बेमुख होए ना मुख लगाउणा। लग्गे दुःख ना किसे छुडाउणा। सुक्क जाए कुक्ख, ना हरी किसे कराउणा। छाही लग्गे मुख, ना दाग किसे मिटाउणा। उलटा होया जीव मनुख, लक्ख चुरासी विच्च फिराउणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मत, गुरमुखां आप समझांउणा। मदिरा मास जे रसन

लगाओ। मुड़ फेरा इस घर ना पाओ। झेड़ा सच्चे दर दा आपणीं हत्थीं आप चुकाओ। काया नगर खेड़ा बेमुख आपणी हत्थीं आपे ढाहो। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दे मत समझावे, देवे ठंडी छाउँ। (२-३ माघ २०१० बि)

सगन अते शादीआं दा दिहाढ़ा : सच प्यार दा सगनां वाला दिहाढ़ा इक्को मिथो, बहुती लोड़ रहे ना राईआ। पोह अठाई उत्तम श्रेष्ट चार जुग दी थितो, थित वार आपणा रंग रंगाईआ। (२८ पोह श सं ११)

जिस गुरमुख कन्या करनी होवे दान, वार थित वड्डी दिआं वडयाईआ। जिस पुतर दा वधौणा होवे माण, लोक परलोक खुशी जणाईआ। सो परविशटिआं विच्चों दिवस अठारां हाढ़ चतर सुजान, हरि संगत इक्को रूप नज़र आईआ। दूजा होर इक्क वख्यान, सतिजुग साचा अन्दरे अन्दर मंग मंगाईआ। किरपा कर हरि मेहरवान, पतिपरमेश्वर तेरी आस तकाईआ। भगत सुहेले कर परवान, दर ठांडे सोभा पाईआ। अठाई पोह चतर सुजान, जगत नाते दे जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति सतिवादी हो सहाईआ। (२ चेत श सं १)

सगन दीआं वस्तूआं : जन भगतो इन्नां दसां नाल सभ नूं लग्गणा सगन :-

१) दस्तार : दुपट्टा : ओढण रूप वखाईआ।
२) इक रुपईआ : गुरमुखां हत्थ देणा टिकाईआ।
३) केसर : साचे प्रेम दा टिक्का लौणा मस्तक खुशीआं नाल, सवा रती सीस निवाईआ। केसर कहे मैं सवा रत्ती, टिक्का भगतां देणा लगाईआ। (३-४ अस्सू दी रात)
४) मखाणे : मखाणयां वाला रस अपार, विच्च मिठा देणा टिकाईआ। (२० तोले)
५) मैहन्दी : मैहन्दी वाला रंग चाढ़, आपणा रंग देणा प्रगटाईआ। (५ तोले)
६) किशमश : पंजां दी किशमश नाल लैणी उठाल, सोहणी बणत बणाईआ।
७) बादाम : सत्तां दा सति बणौणा यार, बादाम छुहारा झोली डाहीआ। (सत्त)
८) छुहारा : (सत्त)
९) गिरी : गिरी कहे मेरा बन्द खोल देणा किवाड़, पर्दा विच्चों देणा चुकाईआ।
१०) मौली : मौली कहे मेरा इक्क अट्टी दा विहार, खट्टी भगतां नाल रलाईआ।
११) लाल कपड़ा : मैनूं आपणे भगतां दे चरनां हेठ लैणा विछाल, गुरमुख उपर लैणे बहाईआ। (सवा गज)

सच घर : सच घर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सच दवारा। (१७ चेत २०१० बि) सच घर सच्चा सचखण्ड है। सच घर गुरसिख तेरी आत्म ब्रह्मण्ड है। सच घर तेरा दसवां दवार तेरा विच्च वरभंड है। (३० जेठ २०१० बि)

सच घराना : सच घराना गुरमुख घर, काया माटी साढे तिन्न हत्थ सोभा पाईआ। जिथ्थे वसे नरायण नर, नारी पुरख रूप नज़र कोई ना आईआ। (९ मध्घर श सं २)

सच समाधी : समाधी अन्दर सच्चा रंग, बिन रंगत नज़री आइंदा । समाधी अन्दर सच्चा अनन्द, बिन रसना जिह्वा आइंदा। समाधी अन्दर सच्चा छन्द, बिन राग ताल गाइंदा। समाधी अन्दर सच्चा चन्द, निरगुण जोत रुशनाइंदा। समाधी अन्दर सच्चा पन्ध, अन्दरे अन्दर पैंडा सर्ब मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच्चा वर, तिस समाधी विच्च समाइंदा।

समाधी विच्च रिखव देव, रिखी मुनी जणाईआ। समाधी अन्दर अलक्ख अभेव, आदि निरञ्जण रुशनाईआ। समाधी अन्दर वड देवी देव, करोड़ तेतीसा ध्यान लगाईआ। समाधी अन्दर मिले निहचल निहकेव, निहकर्मी बेपरवाहीआ। समाधी अन्दर मिले सच्ची सेव, साहिब सतिगुर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी समाधी विच्च समाईआ।

समाधी अन्दर आत्म रस, परमात्म इक्को नज़री आइंदा । समाधी अन्दर जोत प्रकाश, अन्धेर ना कोई रखाइंदा । समाधी अन्दर सच्चा धुन नाद, अनरागी नाद सुणाइंदा। समाधी अन्दर सुरत शब्द जाए जाग, साचा मेल मिलाइंदा। समाधी अन्दर मिले सच्चा राग, कूड़ा रंग ना कोई रंगाइंदा। समाधी अन्दर सन्त सतिगुर सुणे इक्क आवाज़, दूजा राग ना कोई अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस समाधी इक्क समझाइंदा।

समाधी अन्दर सर्ब सुख, दुःख ना लागे राईआ। समाधी अन्दर वेखे साचा मुख, पर्दा द्वैत उठाईआ। समाधी अन्दर वेखे जो बैठा अन्दर लुक, घर विच्च दर्शन पाईआ। समाधी अन्दर पंच विकार कढ़े कुट्ट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। समाधी अन्दर मिले अबिनाशी अचुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, सच समाधी विच्च रखाईआ।

सच समाधी सति सरूप, सति सति जणाइंदा। समाधी अन्दर वेखे चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाइंदा। समाधी विच्च छड्डे जूठ झूठ, सच सुच्च वडिआइंदा। समाधी अन्दर लेखा जाणे रूह बुत्त कलबूत, कलमा नबी रसूल जणाइंदा। समाधी विच्च मिले सच सबूत, सबर सन्तोख इक्क जणाइंदा। समाधी विच्च नूर मिलाए हक़ महबूब, मुहब्बत इक्को इक्क रखाइंदा। समाधी विच्च मिले महल्ल अट्टल उच्च अरूज़, अर्श कुर्श डेरा ढाहिंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणी सच समाधी, तिस आपणा घर वखाइंदा।

समाधी अन्दर सच ध्यान, सच सच दृढ़ाईआ। समाधी अन्दर सच ज्ञान, ज्ञान ज्ञान रुशनाईआ। समाधी अन्दर सच भगवान, भगवान भगवान नज़री आईआ । समाधी अन्दर सच ईमान, धीर सच सच वखाईआ। समाधी अन्दर लेखा तुट जाए अञ्जील कुरान, शास्त्र सिमरत वेद पुरान समाधी विच्च बैठे सेव कमाईआ। सन्त समाधी सुंदर महान, नज़र किसे ना आईआ। शुशील कुमार जे वेखे मार ध्यान, कवण समाधी विच्च आसण लाईआ। सिँघासण अबिनासण इक्क असथान, भूमका इक्को इक्क वखाईआ। चन्द सूरज नैण शरमाण, निर्मल जोत इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस समाधी विच्च समापत सभ कुछ दए कराईआ।

समाधी विच्च होए समापत, जगत इछया ना कोई रखवाइंदा। समाधी विच्च मिले कमलापत, कँवल नैण नज़री आइंदा। समाधी विच्च मिले सच्चा सति, सच सन्तोख धीरज जत, इक्को इक्क वखाइंदा। समाधी विच्च मिले ब्रह्म मत, ब्रह्म विद्या इक्क पढ़ाइंदा। समाधी विच्च मिले आप प्रतक्ख, आप आपा चीन वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच समाधी, तिस आपणा मेल मिलाइंदा।

समाधी अन्दर साचा मेला, आत्म परमात्म इक्को नज़री आईआ। समाधी अन्दर नाता तुट्टे गुरू चेला, चेला गुरू रूप वटाईआ। समाधी अन्दर सच्चा संग सज्जण सुहेला, सन्त सतिगुर इक्को नज़री आईआ। समाधी अन्दर त्रैगुण माया तुट्टे जंजाला, राए धर्म ना दए सजाईआ। समाधी अन्दर आत्म परमात्म पाए गल साची माला, मन का मणका दए भुआईआ। समाधी अन्दर काया मन्दर अन्दर मिले सच्ची धर्मसाला, सच दुआरा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच समाधी, तिस कलिजुग वा ना लागे राईआ।

सच समाधी सच्चा नाता, सति सति मिलाइंदा। सच समाधी साची गाथा, बिन रसना जिह्वा पढ़ाइंदा। सच समाधी नाता तुट्टे पिता माता, भैण भाई नज़र कोई ना आइंदा। सच समाधी मिटे अन्धेरी राता, कूड़ी क्रिया ना कोई रखवाइंदा । सच समाधी लेखा चुक्के ज़ात पाता, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म इक्को इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे सच्चा वर, तिस समाधी कर विस्मादी बोध अगाधी शब्द अनादी घर साचा राग अलाइंदा।

शास्त्र सिमरत तक्कण राह, कवण बैठा समाधी लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान दए लिखा, वेद पुरान शास्त्र सिमरत समाधी ना सकण लगाईआ। समाधी वाला सदा बेपरवाह, निर्भय रूप वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान सभ नूं रहे डरा, हुक्म धुर दा जगत जणाईआ। समाधी अन्दर बण के सच्चा शहनशाह, आत्म सेजा सच सिँघासण उत्ते आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समाधी वखाए सच्चा घर, जिस घर वड़ के मुड़ के फिर जन्म विच्च ना आईआ। (२६ फग्गण २०१६ बि)

सचखण्ड : सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आपणी जोत प्रगटाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आपणी जोत जगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे मंगलाचार कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे संगत दी पैज रखवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे बिदर दी पैज रखवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे दुःखां दा नास कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे जीव जंत तराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे भुल्ले मार्ग पाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे डुब्बदे लए तराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे होए दयाल दरस दिखाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे आ के भोग लगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिखां दी लाज रखवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिखां सिर छत्तर झुलाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे गण गंधरब सीस निवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे तेती करोड़ विच्च चरन आए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सिखां ते फुल्ल बरसाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पुशप वरखा आप कराए। सतिगुर सचखण्ड

बणाया, जिथ्थे अमृत बूंद मुख चुआए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे मेघ बरखा आप कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पकड़ अहलया नूं चरनीं लाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे इन्दर सीस झुकाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे ब्रह्मा दा माण गवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे धरू विच्च समाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे सवरन नूं माण दवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे पाल सिँघ सृष्ट उपाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जिथ्थे तीन लोक दी जोत जगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, कलिजुग विच्च निहकलंक अखवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, घनकपुरी नूं भाग लगाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, बुगिआं नूं माण दवाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, जेठ पंजवीं कलसीं खेल रचाए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, सोहँ शब्द प्रचलत कराए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, वाहवा सति सति सतिजुग वरताए। सतिगुर सचखण्ड बणाया, महाराज शेर सिँघ दरस दिखाए। (१८ विसाख २००७ बि)

सचखण्ड गुरसिख जाणो, जिथ्थे प्रभ वस्सया। हरि का रंग हरि दर ते माणो, जोत सरूप विच्च देह प्रभ वस्सया। (१० चेत २००८ बि)

सचखण्ड कल मातलोक बणा गिआ, जोत जगावे जिथ्थे प्रभ धरनी धरनन। रसना सोहँ शब्द जपा गिआ, साची मति भगतन करनन । (२६ चेत २००८ बि)

सचखण्ड वसे आप निरँकार, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। (१ पोह २०१७ बि) कोटन कोट रूप सचखण्ड, सच साची धार रखाइंदा। (२७ पोह २०१७ बि)

तुसां जाणा उस प्रभू दिआं विच्च महलां, जिस महल नूं सचखण्ड कह के सारे गाईआ। (१ हाढ़ श सं ८)

सचखण्ड हरि भगत पलंघ, पुरख अबिनाशी सेज विछाइंदा। सचखण्ड हरि सन्त अनन्द, अनन्द इक्को इक्क जणाइंदा। सचखण्ड गुरमुख संग, गुर सतिगुर मेल मिलाइंदा। सचखण्ड गुरसिख चन्द, निरगुण नूर नूर चमकाइंदा। (१२ जेठ २०२० बि)

सच ज्ञान : शब्द ज्ञान : तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द सच ज्ञान, आदि जुगादी प्रभ दी धार चलाईआ। (१३ सावण श सं २)

तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स सच ज्ञान, सृष्टी दृष्टी अन्दरों दे बदलाईआ। (८ कत्तक श सं २)

सतिगुर शब्द सच ज्ञान, आदि अन्त वडयाईआ। जुग चौकड़ी देवे दान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कोटन विच्चों जन भगत करे परवान, जिस जन आपणी दया कमाईआ। दिवस रैण इक्क ध्यान, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मंतर इक्क समझाईआ।

शब्द अनादी सतिगुर मंतर, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट दए समझाईआ। भेव चुका गगन गगनंतर, गृह मण्डल खोज खुजाईआ। पंज तत्त बुझा बसन्तर, अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

सतिगुर शब्द सर्ब गुणवन्त, देवे माण वडयाईआ। उत्तम श्रेष्ट विच्च जीव जंत, जागरत जोत

करे रुशनाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलावा साचे कन्त, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या दए समझाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव खुल्ह़ाईआ। सच दवार बणे दरवेश मंगत, घर ठांडे अलख जगाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंडज, उत्भुज सेतज पन्ध मुकाईआ। साची बणे धुर दी बणत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्क सुणाईआ। सतिगुर शब्द बोध अगाध, बिन अक्खरां आप पढ़ाइंदा। कोटन कोट लभ्भदे सन्त साध, लम्भया हत्थ किसे ना आइंदा। जोग अभिआस अन्दर रहे आराध, डूंघी कंदर अन्दर डेरा सर्ब लगाइंदा। सुन समाधी अन्दर हो विस्माद, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोज खुजाइंदा । अठ्ठे पहर दिवस रैण करन याद, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहिंदा। ढोलक छैणे वजावण नाद, धुन आत्मक राग सच ना कोई दृढ़ांइंदा। मन वासना रहे भाज, चारे कुण्ट खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आपणे हत्थ रखवाइंदा।

सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा स्वामी, इक्को इक्क एक वडयाईआ । आदि जुगादि अन्तरजामी, जुग जुग वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मेरे प्रेम दी बोलण बाणी, धुर दा राग सुणाईआ। लेख लिखण शास्त्र सिमरत वेद पुरानी, सिमरत मेरा नाउँ रही जस गाईआ। खेलां खेल दो जहानी, जागरत जोत करां रुशनाईआ। अठ्ठ दस पद निरबाणी, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान मेरी निशानी, अलफ़ ये करां पढ़ाईआ। पीर पैगम्बरां दस्सां खेल महानी, महिंमा अकथ्थ कथ सुणाईआ। गुर अवतारां कर परवानी, सच परवाना इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मैं सूरबीर, समरथ इक्क अखवाइंदा। जन भगतां मारां निराला तीर, अणयाला आप चलाइंदा। काया अन्दर साचे मन्दर बजर कपाटी देवां चीर, दूई द्वैती डेरा ढाहिंदा। नाभी कँवली अमृत बख्शां नीर, साचा जाम इक्क प्याइंदा। मंज़ल चाढ़ देवां अख़ीर, साची चोटी आप बहाइंदा। ना कोई इष्ट देव स्वामी ना कोई तस्वीर, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा । जोती जाता नज़री आए गहर गम्भीर, गुणवन्ता सोभा पाइंदा। मेरी सिफ्त कर के गए पीर फ़कीर, औलीआ ग़ौस कुतब सर्ब रसना गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

शब्द ज्ञान कहे मैं वड्डा दाता, दातिआं विच्चों नज़री आईआ। मेरा खेल ना किसे पछाता, निहकरमी हो के कर्म कमाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवां साथा, सगला संग निभाईआ। अक्खरां नाल जणावां गाथा, निरअक्खर इक्क समझाईआ । नित नवित्त मेटां अन्धेरी राता, सति सतिवादी सच्चा चन्द चमकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वडयाईआ।

शब्द कहे मेरा ज्ञान गहर गम्भीर, कोटन कोटां विच्चों विरले नज़री आईआ। मैं अगम्म अथाह उच्च महल्ल अट्टल वसां अख़ीर, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। मेरा खेल बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं देवां माण शाह हकीर, ऊँच नीच इक्को रंग वखाईआ । मेरा प्रेमी कदे ना होए दलगीर, दूई द्वैत रूप ना कोई वटाईआ । मैं शरअ कट्टां ज़ंजीर, दीन मज़ूब ना कोई लड़ाईआ। मैं हउमे कढ्ढां पीड़, दुरमत मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मैं सच मरदंगा, आदि जुगादी इक्क वजाइंदा । लक्ख चुरासी घट घट अन्दर देवां सति अनन्दा, अनन्द आत्म विच्चों प्रगटाइंदा। डूंघी भवरी काया कवरी सच प्रकाश करां चन्दा, जोती जाता डगमगाइंदा। भेव चुकावां खण्डां पुरीआं ब्रह्मण्डां, लोआं चरनां हेठ वखाइंदा । गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पढ़ौदा रिहा छन्दा, सोहला ढोला आपणा नाउँ वडिआइंदा। भाग लगौंदा रिहा पंज तत्त काया माटी ख़ाकी बन्दा, बन्दगी आपणी इक्क जणाइंदा । नेत्र प्रकाश करदा रिहा अन्धा, लोचण इक्को इक्क खुल्ह़ाइंदा। काया चोली चढ़ौदा रिहा रंगा, दुरमत मैल धवाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी हो के ठंडा, अगनी तत्त बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। ज्ञान कहे मैं सदा निहकरमी, कर्म कांड विच्च कदे ना आईआ । जन भगत सुहेले कर कर मेले मिलावां चरनी, चरन चरनोदक मुख चुआईआ। नेत्र खोल्ह़ के हरनी फरनी, निज लोचण करां रुशनाईआ। साची दस्सां जुग जुग तरनी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा चुकाईआ। शब्द ज्ञान कहे मेरा लेखा अगम्म, अगोचर देवणहार वडयाईआ । ना मरां ना पवा जम्म, मात गरभ ना फेरा पाईआ। पवण स्वास ना कोई दम, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई वडयाईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। तृष्ना रोग ना होए तम, त्रैगुण तत्त ना कोई वखाईआ। आपणा बेड़ा आपे बंन्ह़, धुर दे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सच दर सच रिहा समझाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मेरा खेल अव्वला, हरि हज़रत आप कराइंदा। जुग चौकड़ी फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाइंदा। सच संदेश नित नवित्त घल्लां, मंतर अन्तर नाम दृढ़ांइंदा। पावां सार जलां थलां, टिल्ले परबत फोल फोलाइंदा। दूई द्वैती मेटां सला, हउमे रोग चुकाइंदा। जुग चौकड़ी अछल अछल्ला, वल छल धारी हो के वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हत्थ रखाइंदा।

शब्द ज्ञान कहे मैं दस्सां रीत, धुर दी आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेलां खेल मन्दर मसीत, शिवदवाले मट्ठ रचन रचाईआ। गुर दर दस्सां धाम अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग रिहा वखाईआ।

शब्द ज्ञान कहे जुग चार, जीवां जंतां करां पढ़ाईआ। अक्खरां नाल कर प्यार, लोकमात दिआं वडयाईआ। गुरमुख गुरसिख विरले लवां उठाल, सुरती सुरत आप जगाईआ। अन्दर वड़ के पुच्छां हाल, काया मन्दर फोल फोलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, रस इक्को इक्क वखाईआ। सच प्रीती निभावां नाल, अद्धविचकार ना कोई तुड़ाईआ। गुर अवातरां पूरा करां सवाल, पीर पैगम्बरां पैज रखाईआ। नित नवित्त चल्लां अवल्लड़ी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निराकार निरवैर आपणी सेव लगाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मैं दस्सां सच्च, सति सति दृढ़ांइंदा। जुग चौकड़ी खेल खेलां हस्स हस्स, सोहँ हँसा रूप वटाइंदा। पन्ध मुकावां नस्स नस्स, बण पान्धी फेरा पाइंदा। हरिजन हिरदे वस वस, साचा मंत्र इक्क समझाइंदा। प्रेम प्यार दा दे के रस, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। सुरती शब्दी कर इक्ठ, सोहणा मेल मिलाइंदा। नाम निधान अगम्मी वज्जे नद, धुर दा राग

अलाइंदा। साची सेजा चढ़ां भज्ज, अन्तर आत्म वेख वखाइंदा। सति जैकारा बोलां गज्ज, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा।

शब्द गुरू कहे मेरी साची सिख्या, गुरमुख विरले पाईआ। जन भगतां देवां धुर दी भिच्छया, सति नाम वरताईआ। सन्तां कर के पूरन इछया, तृष्ना जगत बुझाईआ। लेख लिखावां बिधना लिखवया, अग्गे दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहबर हो के रिहा जणाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मैं आवां जग्ग, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ । सन्त सुहेले सज्जण लभ्भ, आपणा संग निभाईआ। करां वसेरा उपर शाहरग, नौं दवारे डेरा ढाईआ। जन्म कर्म दी बुझावां अग्ग, हउमे रोग जलाईआ। हँस बणावां फड़ फड़ कग, कागों हँस उडाईआ। घर सज्जण साचे सद्द, होका दे के दिआं समझाईआ। बिन मक्के काअबिउं करा के हज्ज, हुजरा हक़ दिआं वखाईआ। बिन मन्दर मसीतों जावां लभ्भ, काया मन्दर अन्दर पड़दा लाहीआ। सति प्रकाश हो के जावां जग, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा खेल रिहा वखाईआ।

शब्द ज्ञान कहे मैं वेखां जुग, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गिआ लुक, कलिजुग अन्तम बैठा नैण उठाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण कूड़ी क्रिया सुखना रिहा सुख, साची करे ना कोई पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन लग्गा दुःख, हउमे रोग ना कोई चुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर रिहा बुक्क, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया गृह गृह पई उठ, पत टाहणी रही मुकाईआ। ठग्गाँ चोरां यारां पाई लुट्ट, सति सरूप विच्च नज़र कोई ना आईआ। झगड़ा पिआ पिता पुत्त, नार कन्त ना कोई वडयाईआ। साध सन्त मन्दर मस्जिद शिवदवाले रहे लुट्ट, गुर दर बैठे अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ।

शब्द ज्ञान कहे कलिजुग पिआ रौला, कूके जगत लोकाईआ। किसे नज़र ना आवे मौला, बिसमल रूप ना कोई वटाईआ। पापां भार करे ना कोई हौला, सीस हत्थ ना कोई टिकाईआ। नेत्र रोवे कुरलावे धरनी धरत धौला, खुल्ल्ड़े केस रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वरताईआ।

शब्द ज्ञान कहे कलिजुग मंगी असीस, प्रभ अग्गे इक्क अज़ीईआ । किरपा कर साहिब जगदीस, जगदीसर देणी सच्ची ढोईआ। किसे छत्तर ना झुल्ले सीस, शाह सुलतान रहे रोईआ। करीं खेल बीस बीस इक्क इकीस, लेखा चुक्के त्रै त्रै लोईआ। ठीक रहे ना किसे नीत नीतीवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर तेरे आस रखाईआ। शब्द ज्ञान कहे मैं ऊँचा, अगम्म अथाह अखवाइंदा। कलिजुग ज्ञान कहे मैं फिरा चारे कूटा, दह दिशा वेख वखाइंदा। मेरा निशान दो जहान झूटा, पुरी लोअ ना कोई हिलाइंदा। मैं घर घर कूड़ी क्रिया बीजया बूटा, जूठ झूठ फल लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा ।

कलिजुग ज्ञान कहे मैं बड़ा चंगा, चंगी तरा समझाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत कीता मंदा, अन्तर आत्म समझ कोई ना पाईआ। घर घर कूड़ा दिसे पखण्डा, सच सुच्च ना कोई समझाईआ। साध सन्त आत्म रंडा, हरि हरि कन्त ना कोई हंढाईआ। तट्ट सरोवर जल दिसे ना ठंडा, जगत अगनी रही तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज लीला रिहा वरताईआ। (२० जेठ २०२१ बि)

सच दुआरा : सच दुआरा हरि हरि चरन, दूसर अवर ना कोई वडयाईआ। जन भगतां चुक्के मरन डरन, जन्म मरन फंद कटाईआ। नेत्र लोचण नैण खुल्हे हरन फरन, प्रतक्ख आपणा रूप दरसाईआ। (१३ जेठ २०१६ बि)

सच प्रीत : सच प्रीत हरि की सेवा, सेवा सच विच्च समाईआ। सच प्रीत अमृत मेवा, अंमिउँ रस रस चखाईआ। सच प्रीत वड देवी देवा, देवत सुर आप समझाईआ। सच प्रीत रसना जिह्वा, हरि हरि नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाईआ। (७ हाढ़ २०२० बि)
सच प्रीती सतिगुर प्यार, सति सतिवादी झोली पाइंदा। (११ फग्गण २०१६ बि)
सति प्रीती सतिगुर चरना, गुरसिख गुरू गुरदेव जणाईआ। कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार हरना, आसा तृष्ना संग ना कोई रखाईआ। दिवस रैण तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म शब्द पढ़ना, धुर दा ढोला सहज सुभाईआ। सच दवार एकँकार मल्लणा दरना, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। मन ममता विच्चों मन मनसा वस करना, कल्पणा मात रहे ना राईआ। सतिगुर प्यार विच्च धर्म दी धार होवे मरना, मर जीवत रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। (१८ मध्घर श सं ६)

सच प्यार : सच प्यार विष्नूं मंग, आपणा सीस झुकाया। सच प्यार ब्रह्मे रंग, रंग मजीठी इक्क चढ़ाया। सच प्यार शंकर कट्टे भुक्ख नंग, हत्थ त्रिसूल रिहा सुटाया। सच प्यार सूरज चन्द, एका किरन करे रुशनाया। सच प्यार वंड ब्रह्मण्ड, शब्दी शब्द नाद सुणाया। सच प्यार जेरज अंड, निरगुण जोती जोत जगाया। सच प्यार सुहागी छन्द, गुर सतिगुर आप सुणाया। सच प्यार किसे दर ना होवे बन्द, किला कोट अन्दर रक्ख ना कोई टिकाया। सच प्यार सदा बख्शंद, आप आपणे हत्थ रखाया। जो जन रसना जेहवा गाए बत्ती दन्द, तिस जन हरि हरि लए मिलाया। सच प्यार आत्म अन्तर, निज घर आपणा आप कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आपणा बंधन पाया।
बंधन बंध प्यार, ब्रह्मा सुत भराईआ। प्यार प्यार आधार, बराह रूप वटाईआ। प्यार प्यार सुधार, यगै पुरुष खेल खलाईआ। प्यार प्यार विचार, हाव ग़रीव दए वडयाईआ। प्यार प्यार शंगार, नर नरायण रूप धराईआ। प्यार प्यार जैकार, कपल मुन संग रखाईआ। प्यार प्यार पैज सवार, दॅता त्रै जोत रुशनाईआ। प्यार प्यार करे ख़बरदार, रिखप देव उठाईआ। प्यार प्यार मेले साचा यार, पिरथू देवे माण वडयाईआ। प्यार प्यार अन्दर

धार, मतस आपणे रंग रंगाईआ। प्यार करे आपणी वार, कछप आपणा नूर रुशनाईआ । प्यार खेल करे करतार, धनंतर एका गुण जणाईआ। प्यार हँसा उडे उडार, हँसा खेल खलाईआ। प्यार बल मंगे दवार, बावण भेख वटाईआ। प्यार बाला लाए पार, प्रहिलाद नर सिँघ रूप वटाईआ। प्यार एका जाणे आपणी सार, धरू आपणी गोद बहाईआ। प्यार गज दए आधार, तन्दूआ तन्द कटाईआ। प्यार करे खेल करतार, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आपणे हत्थ रखाईआ।

करे प्यार प्यारा परस, राम राम वडिआइंदा। प्यार मेटे हिरस हवस, होर ना कोई रखाइंदा। प्यार मेघ देवे बरस, अमृत धार चलाइंदा। प्यार मिटाए सोग हरख़, रामा एका रंग रंगाइंदा । प्यार प्यारे करे परख, शाह भबीखण भेव चुकाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि इक्क प्यार, आपणे संग रखाइंदा।

करया प्यार वेद व्यास, चरन ओट तकाईआ। पूरी करे हरि हरि आस, ज्ञान बोध पढ़ाईआ। पुरान अठारां रसन स्वास, जेहवा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार इक्क वखाईआ।

करे प्यार गोपी नाथ, सख़ीआं मण्डल रास रचाइंदा। करे खेल खेल तमाश, एका बंसरी नाम वजाइंदा। सदा सुहेला वसे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। आपे होए दासी दास, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। बिदर खा अलूणा साग, साचा प्यार आप प्रगटाइंदा। बिप्पर सुदामे तन्दल लाभ, मुख आपणे आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आप प्रगटाइंदा।

प्यार प्रगटे गोपी काहन, साचा खेल खलाईआ। प्यार देवे अरजण ज्ञान, गीता ज्ञान इक्क दृढ़ाईआ। प्यार देवे साचा माण, साची सिख्या इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणे प्यार बंने गुर अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर नाल रलाईआ।

प्यार पाया बंधन, कलिजुग आया। मस्तक लाए टिक्का चन्दन, निम वासना विच्च समाया। बोध ज्ञान आत्म होया पंडत, बोध बोधा रूप धराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार आप रखाया।

प्यार रखाए निरगुण धारी, आपणी खेल खलाईआ। करे खेल अगम्म अपारी, प्यार प्यार विच्च प्रगटाईआ। लक्ख चुरासी पावे सारी, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। कलिजुग नाता तोड़े ख़वारी, दूर दुराडा नेड़े पन्ध लिआईआ। ईसा मूसा निभे यारी, मुहमंद संग रलाईआ। एका प्यार कलमा कर जैकारी, हू हू नाअरा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, प्यार तन्द इक्क रखाईआ।

अपर अपारा प्यार तन्द, निरगुण निरगुण विच्च समाया। आपणा खेल कर बख्शंद, बख्शिश आपणी आप वरताया। आपणे नूर चढ़ चढ़ चन्द, सच उजाला दए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आप प्रगटाया।

सच प्यार नानक गुर, हरि सतिगुर आप प्रगटाईआ। मेल मिलाया आपे धुर, धुर बैठा सच्चा माहीआ। निरगुण सरगुण जुड़ी सुर, तार सतार ना कोई वखाईआ। एका मंत्र रिहा फुर,

नाम सति पढ़ाईआ। प्यार अन्दर प्रीतम गिआ जुड़, एका रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार प्यार नाल बंधाईआ।

प्यार नाल बध्धा नाता, नाता परम पुरख बंधाया। नानक गुर इक्को जाता, पुरख अकाल मनाया। आदि जुगादी पिता माता, साची गोद सुहाया। साची देवे ऐको दाता, वस्त अमोलक झोली पाया। आपणा नाउँ सुणाए साची गाथा, साची सिख्या इक्क समझाया। एथे ओथे होए राखा, अठ्ठे पहिर सेव कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क प्यार धुर दरबार, नानक लोकमात लै के आया।

सच प्यार नानक निरगुण, सरगुण झोली पाईआ। ग़रीब निमाणयां पुकार सुण सुण, एका वार वरताईआ। अञ्जण अमर आपे चुण चुण, राम दासे गंढ पवाईआ। अरजण हरि हरि आपे बौहड़, शब्द नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार दए वडयाईआ।

सच प्यार नाउँ बाण, चारे बाणी मुख सालाहिआ। प्रीतम प्यारा लिआ पछाण, घर साचे मेल मिलाया। हाणी मिल्या साचा हाण, घर साचे वज्जे वधाया। ना जीव ना कोई पराण, पुरानी मुकत ना कोई कराया। एका शक्त श्री भगवान, गुर गुर गुर रूप वटाया। एका रकत करे परवान, बूंद बूंदी मेल मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार दए समझाया।

सच प्यार गुर शब्दी धार, नानक अरजण हरि हरि गाईआ। दोहां विचोला बण करतार, बोध अगाधा शब्द सुणाईआ। भगत भगवन्त करे खेल नयार, आप आपणा रूप वटाईआ। चार जुग दे विछड़े यार, एका घर बहाईआ। पांजा एका वेखे एका वार, इकावन आपणी धार चलाईआ। पांजा दोआ आपे पाए आपणी सार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खलाईआ। सति सतिवादी हो त्यार, पंचम देवे सच्ची शाहीआ। पंचम नाद शब्द धुंनकार, नाद अनादी आप सुणाईआ। सत्तवें घर सति सति आवे जावे वारो वार, पांजा साता सति सति मेला सहज सुभाईआ। एका पैंतीस कर त्यार, पंज तीस करे कुड़माईआ। दस बीस खेल करतार, कागद कलम ना लिखे शाहीआ। एका गुरू कर त्यार, गुर शब्द दए वडयाईआ। गुर चरन सच प्यार, चार वरन दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्यार गोबिन्द धार, हरि खण्डा नाल मिलाईआ।

सच प्यार साचा खण्डा, हरि गोबिन्द मेल मिलाया। लेखा जाणे विच्च ब्रह्मण्डां, ब्रह्मण्ड खेल खलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्यार प्यार नाल प्रगटाया। हरिगोबिन्द तेरा प्यार, तेरी धार समाईआ। जोधा सूरबीर बली बलकार, एका डंका रिहा वजाईआ। करे खेल अपर अपार, नाता बिधाता प्यार जोड़ जुड़ाईआ। हरिराए दए आधार, निशअक्खर करे पढ़ाईआ। छोटे बाले कर प्यार, हरिकृष्न लए उठाईआ। हरिकृष्ना कूक गिआ पुकार, तेग़ बहादर मिले साचा माहीआ। करे सच प्यार डुब्बदे लए तार, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्यार आदि जुगादि सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग लक्ख चुरासी विच्च वरताईआ।

सच प्यार हरि वरताया, आप आपणी वार। गोबिन्द सुत एका जाया, बण सुलक्खणी नार। गुजरी कुक्ख दए वडिआया, ना कोई जाणे जीव संसार। भोगी आपणा भोग कराया, भसमड़

होए ना अगम्म अपार। धुर संजोगी मेल मिलाया, मेला करे आपणी धार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार वंडे विच्च संसार।

सच प्यार वंडण आया, गुर सतिगुर रूप धार। पंज प्यारे लए उठाया, करे खेल अपार। आपणा अमृत मुख चुआया, आप आपा विच्चों निकाल। संसा रोग सर्ब मिटाया, निमाणयां बणया साचा यार। ऊँचां नीचां गले लगाया, करया सच प्यार। आप निउँ निउँ सीस झुकाया, बणया दर भिखार। आपणी झोली अग्गे डाहिआ, करे इक्क पुकार। गुरसिख तेरा उच्चा घर बणाया, पुरख अबिनाशी सेवादार। तेरीआं नींहां हेठ आपणा आप दिआं दबाया, आपा तेरे उतों वार। तेरा मन्दर दिआं सुहाया, लोकमात होए उजिआर । हरि का प्यार तेरे अन्दर दिआं टिकाया, दूसर रक्खां ना किसे दवार। जुग जुग दा लहणा दिआं मुकाया, कलिजुग आवे अन्तम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे सच विहार।

आदि प्यार दिता भगवान, आपणी दात वरताईआ। जुग चौकड़ी करया खेल महान, पुरख अबिनाशी बेपरवाहीआ । कलिजुग अन्तम होए प्रधान, निहकलंका नाउँ रखवाईआ । गोबिन्द सूरा होए नाल बलवान, आपणा बल धराईआ। सृष्ट सबाई खोले इक्क दुकान, झूठ दुकान दए मिटाईआ। चार वरनां वेखे मार ध्यान, ज़ात पात ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा प्यार दए समझाईआ।

कलिजुग वेला अन्तम औणा, गुर सतिगुर सच जणाइंदा। पुरख अबिनाशी फेरा पौणा, लोकमात वेख वखाइंदा। लक्ख चुरासी मेल मिलौणा, एका बंधन पाइंदा। सच प्यार इक्क वखौणा, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश एका दर बहाइंदा। दूई द्वैती पड़दा लौहणा, माया ममता मोह मिटाइंदा। साचा मार्ग इक्क वखौणा, सो पुरख निरञ्जण आप लगाइंदा। घट घट अन्दर आत्म ब्रह्म नज़री औणा, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। पुरख अकाल सभ ने गौणा, गोबिन्द सूरा आप सुणाइंदा। मसजद मन्दर मठ शिवदवाला कोई रहण ना पौणा, कलिजुग अन्तम पन्ध मुकाइंदा। सच निशाना इक्क झुलौणा, शाह सुलतानां ख़ाक मिलाइंदा। नौं खण्ड पृथ्मी एका राज जोग करौणा, जुगत आपणे हत्थ रखवाइंदा। धुर फ़रमाना हुक्म सुणौणा, हुक्मी हुक्म आप अलाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लौणा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुरसिख साचे आप प्रगटौणा, धरत मात दी गोद बहाइंदा। धरनी तेरा हौला भार करौणा, बेमुख नज़र कोई ना आइंदा। हिंदू मुसलम सिख ईसाई एका इष्ट वखौणा, दूजा दर ना कोई बणाइंदा। शब्द प्यार आप दिवौणा, शब्दी शब्द मेल मिलाइंदा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान घर घर नाद वजौणा, रागी आपणा राग अलाइंदा। रसना जेहवा सभ ने गौणा, बत्ती दन्द सर्ब हिलाइंदा। उणंजा पवण आप समौणा, पवण स्वास खेल खलाइंदा। अठारां भार बनास्पत बंधन पौणा, बन्दी बन्द आप कराइंदा। रव सस राग अलौणा, मण्डल मंडप नाच नचाइंदा। ब्रह्मा विष्न शिव एका नाउँ धिऔणा, हरि साचा सच जणाइंदा। अन्तम लेखा सभ दा मुकौणा, थिर कोई रहण ना पाइंदा । ब्रह्मा आपणे विच्च मिलौणा, जोती जोत जोत मिलाइंदा। शंकर तेरा डेरा ढौणा, जो घड़या भन्न वखाइंदा। इन्दर फड़ के तख़तों लौहणा, तख़त निवासी खेल खलाइंदा। साचा मार्ग हरि जू लौणा, गुरमुख साचे आप उठाइंदा। ब्रह्मा वेता माण दवौणा, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। छोटे बाले तिलक लगौणा, भोला नाथ सवाइंदा। सत्त

दीप तिन्न लोक इक्क निशान झुलौणा, सुरपत इन्द ढेरी ढाइंदा। मनजीता मनजीत जवौणा, जोबन आपणे हत्थ रखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, सच प्रीत आप निभाइंदा। (२७ सावण २०१८ बि)

सच बेनन्ती : तख़त निवासी हरि निरँकार, निरगुण निरवैर सोभा पाइंदा। शाहो भूप वड सिकदार, शहनशाह आदि जुगादि अखवाइंदा। जोती जाता अगम्म अपार, रूप रंग रेख ना कोई रखवाइंदा। सो महल्ल अट्टल उच्च मनार, दरगाह साची सोभा पाइंदा । दीआ बाती कर उजिआर, कमलापाती नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। मुकामे हक़ परवरदिगार, जल्वा इक्को इक्क दरसाइंदा। लेखा जाण सच घर बार, सचखण्ड साचे माण दवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भेव अभेद अपणे हत्थ रखवाइंदा।

साचे तख़त बैठ करतार, हरि करता खेल वखवाइंदा। खोल्हे भेव अपर अपार, अभेद आप जणाइंदा। सुत दुलारा करे निमस्कार, शब्दी शब्द सीस झुकाइंदा। सच बेनन्ती सच दरबार, इक्क इकल्ला इक्को इक्क रखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल खिलाइंदा।

सच बेनन्ती शब्दी धार, घर साचे आप कराईआ। सच बेनन्ती विष्नूं आधार, विश्व बह बह वास्ता पाईआ। सच बेनन्ती ब्रह्मा चरन कँवल मंगे प्यार, ख़ाली झोली अगे डाहीआ। सच बेनन्ती शंकर नेत्र नैणां रोवे ज़ारो ज़ार, भोला नाथ दए दुहाईआ। सच बेनन्ती त्रैगुण माया उच्ची कूक कूक करे पुकार, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश, पंज तत्त नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड दाता इक्क अखवाईआ।

सच बेनन्ती सच दरबार, हरि करता आप जणाइंदा। सच बेनन्ती अगम्मी धार, शब्दी राग नाद सुणाइंदा। सच बेनन्ती दस्से गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आप समझाइंदा। सच बेनन्ती भगत वछल जन भगतां दए सिखाल, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। सच बेनन्ती सन्त सुहेले मंगण दान, दाता दानी वेख वखाइंदा। सच बेनन्ती गुरमुख सच दवार सुणाण, सुणनहारा इक्क अखवाईआ। सच बेनन्ती गुरसिख अन्तर आत्म राग धुन गाण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोई हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा वड वडयाईआ।

सच बेनन्ती धुर दी कूक, हरि करता आप जणाइंदा। सच बेनन्ती सुणे पिता पूत, पतिपरमेश्वर वेख वखाइंदा। सच बेनन्ती फिरे दरोही चारे कूट, चारे जुग सतिजुग तेंता द्वापर कलिजुग दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। सच बेनन्ती चारे खाणी चारे बाणी करन दर साचे ऊँचो ऊँच, अगम्म अथाह बेपरवाह वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा।

सच बेनन्ती करे चार जुग, चौकड़ आपणा ध्यान लगाईआ। सच बेनन्ती कदे ना जाए मुक्क, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे आस तकाईआ। सच बेनन्ती लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त मंगे सुख, सुखदाइक आपणा रूप वटाईआ। सच बेनन्ती उजल करे मात मुख, निरगुण सरगुण दए वडयाईआ। सच बेनन्ती आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन्म कर्म

दी मेटे भुक्ख, दूई द्वैती तृष्ना रोग मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ।

सच बेनन्ती आदि जुगादि, हरि करता आप दृढ़ांइदा। सच बेनन्ती ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मावेता आप सुणाइंदा। सच बेनन्ती बिसमल रूप हो विस्माद, निराकार साकार आप दृढ़ांइदा। सच बेनन्ती दो जहानां करे आज़ाद, बन्दीख़ाना ना कोई वखाइंदा। सच बेनन्ती सुणे सच महराब, महबूब आपणा पड़दा लाहिंदा। सच बेनन्ती धुर दी आवाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोई रखवाइंदा।

सच बेनन्ती जेरज अंडज सेतज उत्भुज, चारे खाणी रही कराईआ। सच बेनन्ती चारे बाणी रही लभ्भ, परा पसन्ती मद्धम बैखरी खोज खुजाईआ। सच बेनन्ती किसे ना आई हद्द, हदूद समझ कोई ना पाईआ। सच बेनन्ती कर के कोई ना सक्कया रज्ज, सांत सति ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ।

सच बेनन्ती करे अष्टभुज, बिन नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। जिस ने मेरा भेव खुल्हाया गुझ, आदि शक्त दिती वडयाईआ। उस दी ना कोई मन मत बुध, जगत जुगत ना कोई चतराईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दवारे बैठा लुक, दो जहानां नज़र किसे ना आईआ । जिस दी खेल कदे ना जाए मुक्क, भेव अभेद ना कोई दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

सच बेनन्ती आदि शक्त भवानी, हरि करता आप जणाइंदा। परम पुरख दी इक्क निशानी, निरगुण निरवैर निराकार आप दृढ़ांइदा । जुग चौकड़ी जिस दी सिफ्त दी चले जगत कहाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल मिलाइंदा। जिस दी चरन धूड़ अठ्ठ सट्ठ सरोवर पाणी, तीर्थ तट्ट राह तकाइंदा। जिस दा खेल दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जिस दा नूर आदि नुरानी, दीवा बाती नज़र कोई ना आइंदा। जिस दा महल्ल अट्टल उच्च लासानी, लाशरीक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप जणाइंदा।

सच बेनन्ती जुग चौकड़ी करदे, कर कर ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार डरदे, निउँ निउँ बैठे सीस झुकाईआ। कलमा नबी रसूल पढ़दे, सोहला ढोला राग अलाईआ। निउँ निउँ सीस सय्यदे करदे, नेत्र अक्ख ना कोई उठाईआ। चरन कँवलां उपर सीस धरदे, आप आपणा मोह चुक्काईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग वाह वा करदे, वज्जे सच सच वधाईआ। कोटन कोटां विच्चों सच बेनन्ती गुरमुख विरले करदे, जिन्हां अन्तर आत्म परमात्म आपणे नाल मिलाईआ। सच दवारे सति स्वामी होवण बरदे, बन्दीख़ाना देण तुड़ाईआ। साची मंज़ल बिन पौड़ीउँ चढ़दे, दसम दवारी अद्ध विचकार बैठी राह तकाईआ। गुरसिख इस तों अगला घर मलदे, जिथ्थे वसे बेपरवाहीआ। ओथे खेल अछल अछल्ल दे, समझ सके कोई ना राईआ। ओथे लेखे नहीं घड़ी पल दे, छिन भंगर आपणा रंग वखाईआ । सन्त सुहेले गुरू गुर चेले कदे ना हलदे, दो जहान लेखा सके ना कोई मुकाईआ। बिन भगतां बूटे कदे ना फलदे, लक्ख चुरासी सिमल रूप नज़री आईआ। बिन सन्तां दीपक किसे घर

ना जगदे, जोत निरञ्जण ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

सच बेनन्ती जो करे प्रीतम, प्रीतीवान दए दृढ़ाईआ। काया माटी ठांडी होवे सीतल, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। कंचन सोना बणे पीतल, पारस आपणा नाम इक्क लगाईआ। सच बेनन्ती करन गुर अवतार पीर पैगम्बर उडीकण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तम राह तकाईआ। लक्ख चुरासी अन्दर जीव जंत चीकण, उच्ची कूक कूक रहे सुणाईआ। कवण वेला प्रभ मिले लाशरीकन, शरकत सभ दी दए गवाईआ। साची दस्से इक्क तारीखन, पिछली तारीख़ दए मिटाईआ। वस्त अमोलक पावे भीखण, भिच्छया इक्को इक्क वरताईआ। भगत भगवन्त मिल के लेखा चुक्कावण ऊँच नीचन, ज़ात पात रहण कोई ना पाईआ। इक्क दूजे दे अन्दर वड़ के, पौड़े चढ़ के जगत नेत्र दोवें वेखण, निज नेत्र इक्क रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

बेनन्ती कर कर गए चार जुग, नित नवित्त सीस निवाईआ। कवण वेला वक्त जाए पुग, लेखा सभ दा मिले थाउँ थाईंआ। नौं खण्ड सत्त दीप ज़िमीं असमान सुखणा रहे सुख, रव सस बैठे ध्यान लगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेखण उठ, पुरी लोअ नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे झुक, सीस जगदीस इक्क झुकाईआ। कवण वेला प्रभ सुण बेनन्ती साचे सुत, सुत शब्द इक्को नज़री आईआ। जिस दी काया ना कोई बुत्त, रकत बूंद मेल ना कोई मिलाईआ। किरपाल हो के जावे तुठ, मेहरवान हो के मेहर नज़र उठाईआ। सच दवारे आ के लए पुच्छ, दूर दुराडा दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

बेनन्ती कर कर सारे रोवण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारे जुग मूल ना सोवण, चारे खाणी नींद सच ना आईआ। अठ्ठ सट्ठ तीर्थ जलधारा सर्ब वरोलण, उच्चे टिल्ले परबत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कंदर रही कुरलाईआ। लक्ख चुरासी जेरज अंडज उत्भुज सेतज रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे बोलण, बोल बोल राग सुणाईआ । कवण वेला प्रभ सुण बेनन्ती सच दवारा आवे खोल्हण, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। धुर दे कंडे आपे तोलण, नाम तराज़ू हत्थ उठाईआ। सच प्रीती आवे घोलन, घोली घोल घुमाई वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

सच बेनन्ती कर कर थक्के, चारे कुण्ट ध्यान लगाईआ। जीव जंत साध सन्त अक्के, कलिजुग अन्तम बैठे हौसला ढाहीआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ लभद्दे फिरे मदीने मक्के, काया काअबा हुजरा हक़ खोल्ह ना वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकार सत्थर लथ्थे, यारड़ा सेज ना कोई हंढाईआ। मन वासना सारे फिरदे नठ्ठे, मन का मणका ना कोई भवाईआ। जगत वासना सारे रट्टे, रट्टा मुक्के ना कूड़ लोकाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत प्रभू प्रेम प्यार तीर निशाने फटे, घाउ लगा इक्को थाईंआ। उह सन्त सुहेले चरन कँवलां उपर ढठ्ठे, आप आपणा माण अभिमान तजाईआ। ओन्हां पत आपे रक्खे, निरगुण हो के सरगुण दए समझाईआ। परम पुरख अकाल पतिपरमेश्वर गुरमुख जाणे आपणे बच्चे, गुरसिख आपणी गोद उठाईआ। बेनन्ती करन वाले उह सच्चे, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। लक्ख

चुरासी जीव जंत नौ दवारे कूड़ी वासना सारे नच्चे, वांग नटूआ सांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ।

बेपरवाह हरि सच्चा मौला, मौजूदा आपणा खेल कराइंदा। ना कोई पड़दा ना कोई उहला, दूई द्वैत ना कोई जणाइंदा। ना कोई झगड़ा ना कोई रौला, सिध्धा मार्ग सच समझाइंदा। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करदा आया कौला, सो बेनन्ती पूर कराइंदा। प्रगट हो के उपर धवला, कल कलकी वेस वटाइंदा। जिस दा नूर इल्लाही अव्वला, आलमीन वेख वखाइंदा। हर घट स्वामी रिहा मवला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

सच बेनन्ती कीती विष्न ब्रह्म शिव पुकार, त्रै पंज नाल मिलाईआ। तेई अवतार मंगदे गए अधार, दर ठांडे सीस झुकाईआ। मूसा डिग्ग के मूंह दे भार, झोली इक्को इक्क वखाईआ। ईसा कहे मेरा यार, परवरदिगार नूर इल्लाहीआ। मुहम्मद कहे मेरी सुण पुकार, महबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला मेहर नज़र इक्क उठाईआ। नानक गोबिन्दा सृष्ट सबाई दस्स के गए जहान, जीव जंत जगत जणाईआ। सर्ब बेनन्ती सुणे श्री भगवान, पतिपरमेश्वर सभ दा पिता माईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त सभ नूं देवे दान, दाता इक्को इक्क अखवाईआ। सचखण्ड निवासी लक्ख चुरासी नज़री आए इक्को काहन, बंसरी साचा नाम सुणाईआ। शब्द सरूपी नौजवान, ना मरे ना जाईआ। जोत सरूपी नूर महान, लक्ख चुरासी डगमगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वेखे आण, बेपरवाह वेस वटाईआ। सच संदेसा दे फ़रमाण, धुर दी धार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

सच बेनन्ती करी अष्टभुज दुर्गा, कँवल नैन नैन नाल मिलाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि सच दवारे धुर दा, भेव अभेद ना कोई जणाईआ। तेरा हुक्म कदे ना मुड़दा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा मंतर इक्को फुरदा, फुरने अन्दर खेल सबाईआ। तेरा नूर कदे ना होवे मुरदा, मड़ी गोर ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। ..... (पहली हाढ़ २०२१ बि)

सच्चा सौदा : भरम भुलेखे डुब्बा संसार। साचे लेखे गुर दरबार। होए ना एथे कदे उधार। सच्चा सौदा हरि चरन प्यार। बिन गुर पूरे सृष्ट सबाई रही झख मार। ना कोई देवे आत्म शब्द सच्चा अधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा करे जगत विहार। (१२ मध्घर २०१० बि)

सच्चा अखण्ड पाठ : तेरा नाउँ सच्चा सच्चा अखण्ड पाठ, कीर्तन तेरा रहे जस गाईआ। (१० अस्सू २०२० बि)

सच्चा पाठ सतिगुर चरन, चरन मिले सरनाईआ। सतिगुर खोल्हे नेत्र हरन फरन, निज नेत्र करे रुशनाईआ। दीन दयाल तरनी तरन, तारनहारा होए सहाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर सतिगुरू दवारे वड़न, दूई द्वैती पड़दा बजर कपाटी आत्म कुण्डा लाहीआ। रल मिल दोवें इक्को ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। नाता तुटे जम्मण मरन,

मरन जन्म रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जाप इक्को इक्क समझाईआ।

साचा जाप सतिगुर टेक, हरि सच सच जणाया । आत्म प्रकाश बुद्धि बिबेक, मत मतवाली आप समझाया। त्रैगुण पंज तत्त ना लाए सेक, मन वासना मेट मिटाया। निझ नेत्र निझ खेतर निझ काया आप आपणा लए वेख, पेख आपणी खुशी मनाया। पारब्रह्म ब्रह्म करे हेत, दर मेला सहज सुभाया। अन्तर आत्म सच्चा पाठ अचन अचेत, अजपा जाप बिन रसना जिह्वा गाया। गुर सतिगुर करे साचा हेत, हरिजन आपणे रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा पाठ अन्तर नाम दृढ़ाया। (११ फग्गण २०१६ बि)

सज्जा चरन : पूरन पूरा वसे घट घट, पड़दा उहला ना कोई रखाइंदा। चार वरनां तेरा दूई द्वैती मिटया फट, कलिजुग आपणी हत्थीं आपणी पट्टी खब्बे चरन बंनाइंदा। गुरसिखां तन पहनाए साचा पट, सज्जा चरन काया हरि मन्दर विच्च रखाइंदा। अमृत सरोवर देवे झट्ट, नाम प्याला हत्थ फड़ाइंदा। कलिजुग लहणा देणा चुकाया पूजा पाठ, नेत्र लोचण दरस दिखाइंदा। (१ विसाख २०१६ बि)

सज्जा चरन पैहलों धरांगा। भगत भगवान बण के फड़ांगा। (१३ फग्गण २०१३ बि)

जन भगत सज्जा चरन अग्गे टिकौणगे। माण हँकार आपणे विच्चों कढौणगे। दोए जोड़ सीस झुकौणगे। पिछली भुल्ल बख्शौणगे। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रसना जिह्वा गौणगे । सिधे चल के सच दुआरे दर्शन पौणगे । काम क्रोध लोभ मोह हँकार जन्म कर्म दे दुःख मिटौणगे। सज्जे खब्बे नेत्र ना कोई उठाल, नीवीं नज़र ध्यान लगौणगे। साहिब सतिगुर हो दयाल, गल पल्लू वास्ता पौणगे। जिन मन होए शैतान, तिन्नां गुरमुख संग ना कोई रखौणगे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ना बणे अणजाण, नीच कर्म कुकर्मी दो जहानी धक्के खाणगे। (७ चेत २०२० बि)

दरवाज़ा कहे प्रभ जे कोई तेरा ढोला झूठा गावे, रसना नाल सुणाईआ। मेरी पहचाण विच्च ना आवे, धोखा करे विच्च लोकाईआ । श्री भगवान अग्गों समझावे, दे मत रिहा जणाईआ। साचा भगत दर आ के सीस झुकावे, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। सोहँ ढोला सच्चा गावे, अन्तर ध्यान लगाईआ। सज्जा चरन फेर उठावे, नेत्र नैण शरमाईआ। बण निमाणा दर दर्शन पावे, घर साचे वज्जे वधाईआ। मनमुख ना कोई सीस झुकावे, धूढ़ी टिक्का ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच ज्ञान इक्को दए जणाईआ। (८ चेत २०२० बि)

सच्चा जाप : सोहँ शब्द सच्चा जाप। (१६ मध्घर २००६ बि)

ओअं आप, सोहँ देवे प्रभ साचा जाप। विनासे कोट जीव दे पाप। हिरदे वसे प्रभ साचा आप। महाराज शेर सिँघ तेरा वड परताप । (२६ चेष्त २००८ बि)

हरि का नाउँ साचा जाप, जुग जुग माण वडयाईआ। त्रैगुण मेटे तीनों ताप, जगत तृष्ना

अगन बुझाईआ। कोटन कोट जन्म उतारे पाप, पतित पापी पार कराईआ। निरगुण सरगुण मेला सज्जण साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म साचा पाठ, सोहँ शब्द सच्ची पढ़ाईआ। अन्त उतारे पार घाट, मंझधार ना कोई रुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बल आपणे नाउँ रखवाईआ। (७ माघ २०१८ बि)

दुःख रोग उतरे सन्ताप, पत्तित पापी पार कराइन्दा। बालक वेखे साचा बाप, पिता पूत गोद उठाइन्दा। प्रेम प्रीती साचा जाप, निरगुण सरगुण आप समझाइन्दा। घर ठाकर मिले सज्जण साक, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भव सागर पार कराइन्दा। (१३ भादरों २०२० बि)

भगत भगवान करे मिलाप, मिलनी आपणे नाल कराईआ। जिनाँ जपया साचा जाप, जग्ग जीवण गए बदलाईआ। रूह बुत दोवें पाक, ख़ाकी ख़ाक मिले वडयाईआ। शाह पातशाह प्रभ साचा साक, सगला संग बणाईआ। रोग सोग चिन्ता दुःख जगत करे विनास, अबिनाशी आपणा रंग रंगाईआ। सज्जण सुहेला हो के वसे पास, गुर चेला गोद उठाईआ। अन्तम पत्त लए राख, राखा हो के सेव कमाईआ। एहो वड्डिआई पुरख समराथ, हरिजन साचे गोद उठाईआ। पार लंघाए आपणे घाट, पत्तण बह के खुशी मनाईआ । जन्म जन्म दी मेटे वाट, कर्म कर्म दा रोग मिटाईआ। सच संदेशा नर नरेशा शब्दी धार जाए आख, आखर आपणा घर वखाईआ । सच दवारे खोल् ताक, पड़दा उहला दए चुकाईआ। आपणे मिलण दी आपे दस्स के जाच, धुर दी करे नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे गोद उठाईआ। (२३ हाढ़ २०२१ बि)
सभ नूं दस्सया तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साचा जाप, सोहँ ढोला धुर दा धुरदरगाहीआ। (२६ पोह श सं ८)

सच्चा पातशाह : सो पुरख निरञ्जण सच्चा पातशाह, आदि जुगादि वड्डी वडयाईआ। (२३ माघ २०१७ बि)
शहनशाह सच्चा पातशाह, सो पुरख निरञ्जण आप अखवाइंदा। (२३ फग्गण २०१७ बि)

सची सरकार : सची सरकार हरि निरँकार, एका एक अखवाईआ । कोटन कोट जुग बीते विच्च संसार, कोटन कोट राज जोग लए हंढाईआ । कोटन कोट बणे सिकदार, कोटन कोटी कोट ख़ाक मिल जाईआ। अन्त आदि ना सके कोई विचार, चौदां विद्या भेव ना राईआ। चार वेद करन पुकार, कूक कूक कूक सुणाईआ। पुरख अबिनाशी सभ तों वस्सया बाहर, सो पुरख निरञ्जण सच्चा शहनशाहीआ। अन्तम अन्त पारब्रह्म तेरा कज़ा दए उतार, मकरूज़ कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अदल आदल इक्क वखाईआ।
अदल आदल करे इन्साफ़, लोकमात तख़त सुहाइंदा। जन भगत सन्त गुरमुख गुरसिख करे मुआफ़, दूजा बचया कोई रहण ना पाइंदा। कूड़ कुड़िआरा नाता तोड़े जीव जंत सज्जण

साक, साखयात रूप धराइंदा। दो जहानां खोल्हे आपणा ताक, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां एका वार वेख वखाइंदा। लोकमात दिसे जगत खाट, हरि सच सिँघासण नाउं धराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पन्ध मुका के थक्के वाट, वेला अन्तम आइंदा। चौदां लोक खुले हाट, चौदां तबक सीस झुकाइंदा। हरि जू हरि मन्दर बह बह गाए आपणी गाथ, आप आपणा नाउं प्रगटाइंदा। अन्तम वार छुट्टा साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा । लेखा जाणे त्रलोकी नाथ, त्रैभवन खोज खोजाइंदा। आदि पुरख आपणा पूरा करनहारा आपे वाक, अभुल्ल आपणा नाउं धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म तेरा मेला आपे आपणे विच्च मिलाइंदा। (२८ माघ २०१७ बि)

आत्म वेख जीव विचार। एका शब्द साची धार। एका धर्म विच्च संसार करे नैण मुधार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्ची सरकार। सच सरकार सच्ची सिकदारी। जोत सरूपी हरि निरँकारी । वेखे विगसे करे विचारी। लेखा चुकावे आवे जावे वारो वारी। गुरमुखां जाए तारी, बेमुखां करे ख़वारी। एका दिसे पासा हारी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे जाओ चरन बलिहारी। (५ जेठ २०१० बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप बणाए आपणी सच्ची सरकार। सच सरकार सच विहारा। सच सरकार सच्चा दातारा। सच सरकार सच्चा भंडारा। सच सरकार सच्चा वरतारा। सच सरकार सच्चा सिकदारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त ना पारावारा।

सच सरकार एका दात। सच सरकार एका पात। सच सरकार एका मात। सच सरकार भैण भरात। सच सरकार दूई द्वैत पर्दा देवे काट। एका रंग एका संग एका मंग प्रभ सोहँ कसे तंग साचा शब्द असवारा। एका राज एका ताज एका काज एका साज एका बाज सोहँ देवे विच्च संसारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई लेख लिखारा। (१२ जेठ २०१० बि)

सत्तर बहत्तर चुहत्तर : सत्तर साता सिफ़रा मूल, हरि आपणा आप बणाया। सत्तरां अन्दर सुत्ता बिन पावा चूल, पलँघ नज़र कोई ना आया। बिन बरख़ा बरखे फूल, आप आपणी सेव कमाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लहणा आप चुकाया। साची सेवा करे गोबिन्द, पूरा करे कीता कौल इकरारा। भुल्ल ना जाए गुण गहिंद, सरसे तेरा अन्त किनारा। सत्तरां मंगी इक्को ओट हउँ गोबिन्द तेरी बिन्द, दूजा अवर ना कोई सहारा। मंगदे सेवा विच्च सागर सिंध, जिथ्थे तेरा भेख नयारा। सानूं वेख ना सके राजा इन्द, शिव आए ना चल दवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे खेल अगम्म अपारा।

गोबिन्द अन्त सुणाइंदा, निशअक्खर आपे बोल। पुरख अकाल दी झोली पाइंदा, कीता सच्चा कौल। सरसा भेट चढ़ाइंदा, रहणा इक्क अडोल। अन्तम मेला मेल मिलाइंदा, तोलां पूरा तोल। पुरख अबिनाशी नाल लिआइंदा, ना मारे कदे रोल। चरन प्रीती जो घोल घुमाइंदा,

अन्तम पर्दा देवे खोल्ला। सच दवारे सोलां कला कृष्न नैण शरमाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अनमोल।

खेल अव्वला गुर गुर धार, आपणा आप जणाइंदा। पहलां सिख कर अरदास, गुर अगे सीस झुकाइंदा। कवण वेला करे बन्द खुलास, नित नित तेरा अरदासा करया ना जाइंदा। मैं वसां तेरे पास, दूजा घर ना मोहे भाइंदा। वेले अन्त ना करे निरास, एका मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर मेहर नज़र आप टिकाइंदा। पुरख अबिनाशी मेहरवान, गुर गोबिन्द विच्च समाईआ। गोबिन्द बण बण देवे दान, भेव कोई ना पाईआ। आपे पिता आपे पुत करे खेल श्री भगवान, वल छल खेल जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका हुक्म सुणाईआ। सच संदेशा गोबिन्द पूरा, गुर सतिगुर आप सुणाइंदा। तेरा अरदासा होए पूरा, वेला वक्त समझाइंदा। तेरे अन्दर आए जोती नूरा, भेव कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बचन आप जणाइंदा।

साचा बचन अन्तम कौल, गुर गोबिन्द आप जणाईआ। देवां वड्डिआई उपर धौल, धरनी भाग लगाईआ। पंज तत्त तेरे अन्दर जाए मौल, आपणी खेल खलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा अमृत देवे साची पौहल, प्यावणहार नज़र ना आईआ। अठाई साल रहणा अनभोल, अठाई कुण्डां नाल मिलाईआ। पुरख अबिनाशी आपणा तोले फेर तोल, साचा कंडा हत्थ उठाईआ। निरगुण सरगुण अन्दर वजाए ढोल, मात पूत करे रुशनाईआ। तेरा पूत अरदासा करे ना किसे कोल, घर बैठा रहे सच्चा शहनशाहीआ। सत्तरां रक्खे तेरा मूल, सति सतिवादी होए सहाईआ । एका बंन के चल्लया असूल, असल आपणा विच्च छुपाईआ । कलिजुग अन्तम मिले मासूल, चुंगीखाना तेरा गढ़ बणाईआ। जो तेरे सुत करे कबूल, तिस शाह पातशाह लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सरसा किनारे दिता वर, सिँघ वीर ना जाणा डर, लोकमात तेरा उपजे पंज तत्त काया गढ़, गढ़ साचा आप बणाईआ।

नारी रूप होए मिले वर, गुण अवगुण ना कोई जणाईआ। बिशन कौर नाम धर, सिँघ पूरन कुँख सुहाईआ। सत्तरां फड़ाए एका लड़, बसन्त कौर नाल वडयाईआ। जीवण सिँघ भुल्ला जाए तर, भुल्लयां मार्ग पाईआ। सिँघ जसबीर छोटा बाला लए फड़, टुटी गंढ वखाईआ। भगवान सिँघ देवे वर, जात पात ना कोई रखाईआ । सिँघ हरभजन बंने लड़, बचन सिँघ मेल मिलाईआ। सिँघ अमरीक जाए तर, सिँघ मस्सा खुशी मनाईआ। सिँघ सरैण मिल्या नर, इन्दर सिँघ रंग चढ़ाईआ। सिँघ मोहण चुक्के डर, ऊधम सिँघ सिँघ रुशनाईआ। सिँघ गुरबचन तरनी जाए तर, तेजा सिँघ खुशी मनाईआ। हीरा नंद मरनी ना जाए मर, सिँघ ईशर गीत गोबिन्द अलाईआ। समुंद सिँघ मिले वर, मनी राम रंग चढ़ाईआ। हरबंस कौर एका अक्खर लिआ पढ़, अठ्ठे पहर खुशी मनाईआ। सिँघ दलीप लगाई जड़, सिँघ दलीप होए रुशनाईआ । सिँघ करतार किरपा कर, मंगल सिँघ गोद बहाईआ। सिँघ हरबंस नुहाए साचे सर, सिँघ बलवन्त नाल मिलाईआ। सिँघ सवरन चुक्के डर, महिंदर सिँघ भेव ना कोई रखाईआ। चरन सिँघ चरन सीस लए धर, बचन सिँघ बचन अमोलक एका गाईआ। मेला सिँघ ना जाए मर, दिदार सिँघ दरस चाईं चाईआ। दलीप सिँघ लग्गी जड़, प्यारा

सिँघ होई कुड़माईआ। माझे तेरी टुट्टी गंढी, अद्धी वंड तेरी झोली पाईआ। उँनी कतक जिस दा फड़या लड़, छुट्ट कदे ना जाईआ। पार किनारा देवे कर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ।

हरिजन साचा मेलया, सिँघ सीतल सीतल धार। अरजन सिँघ आवण जावण चुक्कया गेड़या, कर्म सिँघ कर प्यार। मुकन्द सिँघ चाओ घनेरया, सिँघ दरबारा ना आए हार। भाग सिँघ वसे खेड़िआ, सिँघ मुखत्यार करे प्यार। सिँघ माधो गेड़ा गेड़िआ, सिँघ निंरजण करे उजिआर। सिँघ धन्ना ना ढाए ढेरया, हरबंस सिँघ देवे इक्क सहार। हरबंस सिँघ चुके मेरा तेरया, मेहर सिँघ कर विचार। सरवण सिँघ लक्ख चुरासी विचों आप निखेड़या, आप आपणी किरपा धार। पुरख अबिनाशी बध्धा बेड़या, कलिजुग तेरी अन्तम वार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अपर अपारा।

सच खेल हरि करतार, आपणी आप कराइंदा। कुलदीप कौर कर त्यार, सच सपूत्री नाल मिलाइंदा। सिँघ सेवा दए अधार, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। हरचरन सिँघ इक्क प्यार, हरि चरन सिँघ रंग रंगाइंदा। सतवन्त कौर उतरे पार, सिँघ पाल गंढ रखाइंदा । प्रीतम सिँघ वणज वपार, लाल सिँघ हट्ट विकाइंदा। मस्सा सिँघ कर शिंगार, ख्याल सिँघ जोबन आप हंढाइंदा। करे खेल सच्ची सरकार, साकी बण बण जाम प्याइंदा। साचा मन्दर कर त्यार, साचे सज्जण सेव वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे मेल मिलाइंदा।

मेल मिलावा हरि निरँकार, प्रकाश चन्द दए वडयाईआ। राम चन्द दए अधार, प्रेम चन्द नाल मिलाईआ। सिँघ शिव उतरे पार, गूड़ा राम रंग वखाईआ। सिँघ बेला बेली बणया आप करतार, अंगरेज सिँघ आपणे रंग वखाईआ। ज्ञान चन्द डुबदा बेड़ा लाए पार, सिँघ सरदारा होए सहाईआ। अवतार सिँघ सच विहार, हरि साचा सच समझाईआ। हरदित सिँघ मिले आप निरँकार, बिन नेत्र दरसन पाईआ। सतरां नाल इक्क प्यार, सति सतिवादी आप रखाईआ । सत्तरां सत्तर सच विहार, साची सेवा बूझ बुझाईआ। छब्बी पोह उच्चे मन्दर चढ़ मिनार, चुहत्तरां लए मात प्रगटाईआ। पंजां प्यारयां रहणा ख़बरदार, शब्द संदेशा रिहा सुणाईआ। नाल रलौणा सिँघ गिरधारा यार, तारा सिँघ मेल मिलाईआ। किशन सिँघ कर विचार, पल्लू सिँघ नाज़र हत्थ फड़ाईआ। पंचां बाडीआं देवे प्यार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पंजे रखाए सलाहकार, लोकमात गुण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया आप कमाईआ। (१६ कत्तक २०१८ बि)

तेरा दवारा होए छत्ती फुट्ट, छत्ती छत्ती नाल मिलाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर तेरी नींह लैण पुट्ट, चौदां चौदां सेव कमाईआ । चार कुण्ट पए लुट्ट, मच्चदी जाए दुहाईआ । गोबिन्द बूटा जाए फुट, जो नीहां विच्च गिआ दबाईआ। तेरा सिख सोया जाए उठ, जगत नींदर दए मिटाईआ। छब्बी पोह देवे भंडारा अतुट, आपणे हत्थ वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छत्ती छत्ती तेरी लकीर, सिँघ गुरदयाल मंग मंगाईआ। तेंता द्वापर कलिजुग बणया रहे फकीर, सतिजुग वेला चेते कराइंदा। तेरे नाम दी मार ज़ंज़ीर, आपणे तन बंधन पाइंदा। एका रक्खी आस अन्त चोटी चढ़ना अख़ीर, साचा डण्डा

एका हत्थ फड़ाइंदा । तूं पीरन वड पीर, बेनज़ीर तेरी नज़र ना कोई बदलाइंदा। तेरे हत्थ तेरी शमशीर, तेरी शरअ ना कोई वखाइंदा। छत्ती राग वहावण नीर, छत्ती छत्ती घेरा पाइंदा। फेर वखाई आपणी तस्वीर, पन्थ ख़ालसा आप उठाइंदा। पहली चेत बदल तकदीर, तदबीर आपणे हत्थ रखाइंदा। जिस नूं कहन्दे उच्च दा पीर, बण हकीर सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, आपणा खेल आपणे हत्थ रखाइंदा।

सत्तर सिख रहण त्यार, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। इक्क इक्क इट्ट देण उखाड़, इट्ट इट्ट नाल रहण ना पाईआ। छत्ती छत्ती कर प्यार, छत्ती छत्ती बंधन पाईआ। बहत्तर बहत्तर देवे धार, धार धार विच्च जणाईआ। चुहत्तर चुहत्तर लए उठाल, सति सति सति सति सेव कमाईआ। चौदां चौदां कर बहाल, गलों ज़ंज़ीर दए कटाईआ। सचखण्ड बणा सच्ची धर्मसाल, लोकमात दए सुहाईआ। उपर बैठ दीन दयाल, साढे तिन्न हत्थ दए वडयाईआ। गोबिन्द आए चल के लाल, पहली चेत रुत सुहाईआ। औंदा जांदा किसे ना दिसे करे खेल कमाल, कमली वाला इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर बहत्तर चुहत्तर छब्बी पोह दए प्रगटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल वाली दो जहान, छत्ती दिवस सेव कमाईआ। (१ अस्सू २०१८ बि)

भगत तराए हरि भगवान, भय भउ ना कोई जणाया। लेखा जाणे दो जहान, सति सतिवादी वेस धराया। साता दूआ कर परवान, अंक अंक नाल मिलाया। दूआ साता रिहा बेपहचान, रूप रंग ना कोई वखाया। साता दूआ खेल करे महान, साची वंडन वंड वंडाया। बहत्तर जन करे परवान, भगती भगत भगत समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराया।

भगतां अन्दर भगती धार, हरि साचा सच जणाइंदा। आत्मा सिँघ सिँघ कर प्यार, सिँघ फौजा नाल मिलाइंदा। दर्शन सिँघ देवे दरस दिदार, नेत्र नैण खुलायंदा। सिँघ ठाकर मेले ठाकर दवार, ठोकर नाम लगाइंदा। अमरजीत सिँघ अमरापद धार, अमर अमर कराइंदा। सरजीत सिँघ हरि सिरजण हार, सिँघ आपणी खेल खलाइंदा। बख्शीश हरि बख्शणहार, बख्शश आपणी झोली पाइंदा। दलीप सिँघ देवे तार, सिँघ पाल नाल रलाइंदा। फौजा सिँघ भर भंडार, सिँघ सोहण समझाइंदा। सिँघ कुंदन तारे आपणी वार, सुखदेव सुख समझाइंदा। मस्सा सिँघ मसत मसत मुनार, एका रंग चढ़ाइंदा। सुरजण सिँघ करे शंगार, नरायण सिँघ नैण चमकाइंदा। अवतार सिँघ कर प्यार, सविंदर सिँघ संग निभाइंदा। काशी राम कृष्मा अमृत धार, सिँघ बंता झोली पाइंदा । जसबीर देवे धीर, चरन घते इक्क वहीर, सिँघ सन्ता संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा खेल आप कराइंदा।

साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। सिँघ केहर करे प्यार, मल सिँघ नाल मिलाईआ। गुरदास सिँघ दए अधार, जरनैल सिँघ सोभा पाइंदा। सिँघ सरदारा देवे तार, गुरबचन सिँघ करे कुड़माईआ। राम सिँघ खोलू किवाड़, नेत्र नैण नैण समझाईआ। सिँघ सौदागर मन्दर आपणे वाड़, काया गागर बूझ बुझाईआ। बूड़ सिँघ जोत निराकार,

नूर नुराना आप दरसाईआ। अमर सिँघ अमरापद चाढ़, गुरदयाल गुर गुर रूप समाईआ। सिँघ नाज़र दए अधार, निरञ्जण एका नैण खलाईआ। सिँघ सरदारा करे विचार, गज्जण सिँघ सोभा पाईआ। हरबंस सिँघ उतरया पार, भाग सिँघ भाग वडयाईआ। सिँघ जागीर करे शंगार, तन बसतर इक्क छुहाईआ। हरचन्द सिँघ होवे पार, खुशी बन्द बन्द आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। प्रीतम सिँघ प्रेम प्यार, सिँघ प्रगट नाल मिलाईआ। रतन सिँघ अमोलक लाल, सरूप अनूप दरसाईआ। सिँघ सरूप करे प्रितपाल, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ। गुरमुख सच्चा वेखे लाल, लाल सिँघ दए वडयाईआ। नसीब सिँघ करे बहाल, सिँघ रेशम नाल मिलाईआ। जसवन्त सिँघ ना खाए काल, गुरमीत सिँघ मिले वडयाईआ। गज्जन सिँघ ना होए कदे बेहाल, गुरमेज रंग वटाईआ। केसर सिँघ आपणा लाल, गुरदेव सिँघ खुशी मनाईआ । तारू सिँघ होए दयाल, सिँघ वतन वज्जे वधाईआ। अरजण सिघ सुरत संभाल, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। बलवन्त कौर देवे तार, धर्म सपतनी सिँघ बिशन वडयाईआ। सुदरसन देवे इक्क अधार, नारी रूप वटाईआ। भागन सोहे सच दवार, नेत्र जागण खुशी मनाईआ। रणजीत कौर मिल्या सच घर बार, शाह पातशाह होए सहाईआ। कुछ सिख रक्ख लए तीजे दिन फिर करे विहार, आपणा पर्दा आप उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

बहत्तर भगत अकट्ठ, एका दर सुहाइंदा। चेला सिँघ नाम लिआ रट, तेज भान हरि गुण गाइंदा। गुरदित सिँघ लेखे लाई रत, सिँघ लछमण पार कराइंदा। देवा सिँघ खेड़ा ना होए भट्ठ, धर्म चन्द जोड़ जुड़ाइंदा। देवी सिँघ गेड़े लट्ठ, आपणा गेड़ा आप भवाइंदा। भगत सिँघ मार्ग दस्स, सिँघ जसवन्त राह चलाइंदा । सविंदर सिँघ मेला हस्स हस्स, टोपन साचे घोड़ चढ़ाइंदा। बहत्तर तार ना करे बस, जो आया पार कराइंदा। चुहत्तरां पैहलों पूरी करे आस, सत्तर आपणे अगे लाइंदा। सत्तर बहत्तर चुहत्तर इक्क इक्क नाल इक्कीआं करे बन्द ख़लास, इक्कीआं अगे इकी इकी होर तराइंदा। कोई हो के ना जाए निरास, सभ दा लेखा आपणी झोली पाइंदा। सदा सहेला वसे पास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तर बहत्तर चुहत्तर तिन्नां अंक कर अकत्तर, तिन्नां विचोला बणे बहत्तर, सिफ़रा उडाए सत्तर, साता रहि जाए सभ दा मित्र, चौका चौथा जुग बणया चतर, साता सति सतिवादी मारे छित्तर, सभ नूं मूंह दे भार सुटाइंदा।

बहत्तर भगत जीव जंत देंदे रह जाण पतर, पूरब लहणा झोली पाईआ। अग्गों सभना पंज विकारा देवे लितड़, आपणा भार उठाईआ। गल लगावे भरीआं चिक्कड़, दुरमत मैल धवाईआ। छत्ती जुग गुरसिखों तुहाढ्ढा करदा आया फिकर, फिकरा आपणा मात चलाईआ। जिस दे पिच्छे जिकरीए चिराया ज़िकर, सो तुहाढ्ढा ज़िकर आपणी खुशी मनाईआ। जिस नूं कहन्दे गए आदि जुगादि लेखा देंदा सो कलिजुग अन्तम आया नित्तर, निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। जिस नूं गोबिन्द बणाया मित्र, सो मित्र बण बण सेव कमाईआ। जो बण हँकारी बैठे विटर, अन्त सभ नूं ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह सच्चा शहनशाहीआ।

बहत्तर सिख बहत्तर नाड़ी, नाड़ नाड़ नाड़ समाइंदा। निरगुण फिरे पिच्छे अगाड़ी, सरगुण

तेरी सेव कमाइंदा। रक्खे लाज चरन सुहाई दाड़ी, लाजावन्त आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क समझाइंदा। (१ कत्तक २०१८ बि)

सत्तरां मेला सर्बंग, सर्बंग दया कमाईआ। सत्तरां मिल्या संग, संग निभाईआ। सत्तरां चढ़या रंग, रंग रंगाईआ। सत्तरां पूरी करी उमंग, उमंग झोली पाईआ। सत्तरां चढ़या चन्द, चन्द रुशनाईआ। सत्तरां मिल्या अनन्द, अनन्द वडयाईआ। सत्तरां मिल्या गोबिन्द, गोबिन्द होई कुड़माईआ। सत्तरां मेला गुणी गहिंद, गहर गम्भीर सेव कमाईआ। सत्तरां लेखे लग्गी जिंद, जिंद वारी घोल घुंमाईआ। सत्तर सरसे गए खिण्ड, अन्तम इक्ठे आप कराईआ। गोबिन्द पहलों सम्बल नगर बधा पिण्ड, पुरी अनन्द तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां देवे माण वडयाईआ।

सत्तरां जोगा होया आप, सति सति समझाईआ। सत्तरां बणयां माई बाप, पिता पूत समझाईआ। सत्तरां कोलों करा आपणा नाप, हरि आपणी वंड वंडाईआ। आपे कर खेल तमाश, प्रभ वेखे चाईं चाईंआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । सतरां होया आपे जोगा, जीवण जुगत जुगत जणाइंदा। गोबिन्द बदलया आपणा चोगा, चोला ना होर हंढाइंदा। निरगुण हो के देवे होका, सरगुण खेल कराइंदा। अन्त नदेड़ जो दे के गिआ धोखा, अद्धविचकार रखाइंदा। अन्तम वेखण आया मौका, मोतबर आपणा नाउँ धराइंदा। जिस ने छड्डया पटना पौंटा, सो पोह छब्बी रंग रंगाइंदा। एका ढय्या सुत्ता रिहा ला के ढौंका, फिर आपणी करवट बदलाइंदा। गोबिन्द कदे ना जाए औंता, पूत पोतरे वेख खुशी मनाइंदा। धरती मात साफ़ रक्खया कर के चौंका, ख़ाकी ख़ाक साफ़ कराइंदा । गोबिन्द करे उसारी नाल शौंका, गोबिन्द आपणा खून भेट चढ़ाइंदा। जन भगतां आपे पहुंचा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां आपे दया कमाइंदा।

सत्तरां देवे माण, माण वडयाईआ। सत्तरां देवे ज्ञान, ज्ञान चतुराईआ। सत्तरां देवे ध्यान, ध्यान लगाईआ । सत्तरां देवे पीण खाण, अमृत रस वखाईआ। सत्तरां देवे गान, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। सत्तरां देवे दान, नाम अनमुला झोली पाईआ। सत्तरां खेल करे महान, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाईआ। सत्तरां चाढ़े आपणे उपर मकान, बेमकान खेल कराईआ। सत्तरां कोलों आपणे चार जुग दी चार कुण्ट दी उजाड़ देवे दुकान, सत्तर इट्टां दए उखड़ाईआ । साढे तिन्न हत्थ भगत दवारे चोटी उत्ते ला भगवान, भगतां खुशी मनाईआ। गुरमुख तुहाढ्ढा झुल्ले निशान, सतिजुग साचे वज्जे वधाईआ । मन्दर मस्जिद शिवदुआले सर्ब मिट जाण, लोकमात रहण ना पाईआ। इक्क गोबिन्द दूजा रहे भगवान, तीजी संगत नाल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी श्री भगवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ । कोटन कोट गुर अवतार पीर पैगम्बर ब्रह्मा विष्न शिव सीस झुकाण, दोए जोड़ पैण सरनाईआ। तख़त निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। इक्को वार गुरमुखां वल करे ध्यान, इक्को पौड़े दए चढ़ाईआ। जिथ्थे झुल्ले धर्म निशान, दूजा निशाना ना कोई रखाईआ। जिथ्थे इक्को इष्ट नौजवान, बुढ्ढा बाल ना कदे हो जाईआ । जेहड़ा गुर अवतारां देंदा रिहा दान, सो दाता दानी इक्को मंगो जिस दे मंगयां भुक्ख रहे ना राईआ। उस दे चरनां हेठां लुको, शहनशाह शेर इक्को

इक्क अवखवाईआ। उस दे साया हेठ बांह कढ़ु के बुको, प्रभ मिल्या सच्चा माहीआ। आपणे निशानउँ कदे ना उको, गोबिन्द पिच्छे धार सिखवाईआ। हुण नेड़े आ के ढुको, देवे दरस दर्दी आपणा दर्द वंडाईआ। सारे इक्ठे हो के पुछो, किथे लुकया रिहों नज़र किसे ना आईआ। अग्गे हो के फड़ लउ गुटों, जिस हत्थ नाल फड़ी तलवार, तिस हत्थ नाल गुर सतिगुर लउ मनाईआ। कर प्यार प्रभ चरनी झुको, झुकवीं खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

सत्तरां याद, याद जणाया। सत्तरां सुण फ़रयाद, फ़रियादी फेरा पाया। सत्तरां देवे दाद, वस्त वंडाया। सत्तरां वज्जे नाद, नाद अलाया। सत्तरां हो विस्माद, विस्मादी खेल रचाया। सत्तरां खोल्ही जाग, जागरत रूप जणाया। सत्तरां सुणी आवाज़, दूर दुराडा नद्द के आया। सत्तरां रचया काज, करनी करता आप कमाया। सत्तरां नाल रलाए पंज राज, मिसत्री आपणा हुक्म मनाया। पिच्छे जो संगत रह गई छब्बी पोह सभ नूं इक्ठा कर के देवे दाज, इक्को जेही झोली दए भराया। गुरसिख नाल सत्तर सत्तर इट्टां प्रभ साचे लई लै के औणा दाज, धर्म दुआरे तुहाढ़ु मन्दर दए बणाया। ओथे इक्को इक्क समाज, दूजी वंड ना कोई वंडाया। उत्ते लिख दए सिर संगत पहनाया ताज, सिर आपणा भेट चढ़ाया। जिस ने करना सच्चा राज, दरगाह साची वेख वखाया। जिहने सत्तरां उतों सिफ़रा कर के सारा संसार जाणा खाज, खा खा आपणा शुकर मनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्तरां हरि संगत संग इक्को रंग वखाया।

सत्तरां वाला इक्को सतिगुर, सति सतिवाद अखवाईआ। साता सिफ़रा गए जुड़, अंक अंक नाल मिलाईआ। सति सरूप सिफ़रा हो के रिहा दौड़, नज़र किसे ना आईआ। सिफ़रा घर घर रिहा बौहड़, सति सति सुणाईआ। सत्त कहे सति गिआ दौड़, सति सिफ़र रूप हो जाईआ। बिन सतिगुर सिफ़र सति ना करे कोई मिट्ठा कौड़, रस अमृत ना कोई भराईआ। सो सतिगुर चढ़या साचे घोड़, जिस दी सिफ्त कर कर थक्के लिख लिख लेख कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच सच सच अखवाईआ।

सच सतिगुर इक्को सतर, आदि जुगादि समाइंदा। सति सतिगुर खोल्हे पत्र, आपणा वरका आप उलटाइंदा। सति सतिगुर धार दुतर, दोए दोए रूप धराइंदा। सति सतिगुर पिता पुत्तर, गोबिन्द अकाल रंग रंगाइंदा। सति सतिगुर लुकया रहे आपणी नुक्कर, नज़र किसे ना आइंदा। सति सतिगुर हरिजन करे शुकर, शुकरीआ इक्क मनाइंदा। सति सतिगुर बिन मां पिउ बिन जननी आए उतर, कुक्खीं भाग ना कोई लगाइंदा। सति सतिगुर जैंह वेखो तैंह जाए उपड़, दूर नेड़े ना कोई जणाइंदा। सति सतिगुर सरसे वाला ना गिआ मुकर, पिछला लेखा आप मुकाइंदा। जिन्हां पिच्छे वारे जिगरे टुकड़, लख़ते जिगर भेट चढ़ाइंदा। तिन्हां पिच्छे पिआ उपड़, अगला पन्ध मुकाइंदा। अल्ला राणी नूं कोई ना कहे फुफी मीआं बणे ना कोई फुफड़, भैण भाईआं अग्गे लाइंदा। किसे ज़ोर ना चले जिन्हां दाड़ी रती कीती बण के चिट्टे कुकड़, चितू सभ नूं आप बणाइंदा । वेले सिर आ के गिआ पुखर, आपणा खेल वखाईआ। जिस दीआं घर घर सुखणां सुखण, सो बिन गुरसिखां मिले ना किसे माहीआ। सृष्ट सबाई भरी दुःखण, धूआंधार लोकाईआ । बाहों फड़ कोई ना आए चुक्कण, सारे बैठे मुख भुआईआ। दूर दुराडे बह बह बुक्कण, अग्गे वेखण शेर पिच्छे सभ मुड़ जाईआ। इक्क दूजे नूं कहण

चलो रल के चलीए कुट्टण, आपणा बल धराईआ। जिस वेले श्री भगवान मार भब्बक आपणी खोल्हे बुकल, सारे भज्जण वाहो दाहीआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां थां ना लभ्भे लुकण, बिन हरि चरनां ओट नज़र कोई ना आईआ। सारे इक्क दूजे नूं दस्सण, साडा पैंडा आया उत्ते मुक्कण, अगला लेखा रहे ना राईआ। श्री भगवान नौजवान मेहरवान दीन दयाल ठाकर स्वामी कोझयां कमलयां आप गिआ चुक्कण, चुक चुक आपणी गोद बहाईआ। गोबिन्द नाल रक्खया पुत्तण, पिता पूत फेरा पाईआ। गुरमुख दुआरे गिआ झुकण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लक्ख चुरासी गिआ फूकण, इक्क फुंकार लगाईआ। दो जहानां गिआ सूतण, नाम वटणा रिहा चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तम सारे भूतन, बीर बेताल नाच नचाईआ। श्री भगवान सभ दे सिर विच्च मारे जूतन, जो बैठे नाम भुलाईआ। लेखा जाणे चारे कूटन, दह दिशा वेख वखाईआ। नाता तोड़े जूठ झूठण, जूठिआं झूठिआं थुक्कां मुख भराईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेखे अवधूतन, जो तन बैठे ख़ाक रमाईआ। गुफ़ा अन्दर वेखे सुत्ते घूकन, जो अक्खां कर बन्द कन्नां विच्च उंगलां पाईआ। जो सूरां वांगूं सूकण, सारे साध उठाईआ। जो पीवण भंग बूटन, सभ दी जड़ उखड़ाईआ। जो सुलफ़िआं लावण सूटन, तिन्नां करे सफ़ाईआ। जो तमाकु पी पी नशा झूटण, झटका सभ दा दए कराईआ। जो उच्ची बोल बोल मन्दर मस्जिद शिवदआले मठ्ठ कूकण, कूकर सूकर जून भुआईआ। हरि भुलयां दे सिर विच्च अन्त कुते मूतण, किते ना मिले थाईआं। जामा भुआए हाकन डाकन बैताल भूतन, अंचनी कंचनी नाउँ धराईआ। कलासोदरी होए ऊतन, इजीआ बिजीआ दए दुहाईआ। सृष्ट सबाई वेखे रोगण, सुख नज़र किते ना आईआ। आपणा कीता सारे भोगण, लेखा सभ दी झोली पाईआ। लाड़ी मौत बणे कलजोगण, मास चुंजां नाल तुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया होए वजोगण, चारों कुण्ट फिरे हलकाईआ। सिर दिसे ना कोई ओढण, खुल्ही मींढी पत लुहाईआ। चोर उच्चक्के राह विच्च बोचण, लुट खसुट मचाईआ। जिस नूं सतिगुर नानक किहा उहदा खेल विच्च ना आए सोचण, बिन सोचयां रिहा रचाईआ। जिस ने माण दिवाया धन्ने तरलोचण, नामा नाल मिलाईआ। जिस ब्रह्मे समझाया कपाल मोचण, पुशकर भेव खुल्हाईआ। सो सृष्ट सबाई आया झोकण, अनझक्क फेरा पाईआ। गुरसिखां नूं आया रोकण, कूड़ी क्रिया छड्डो जूठा झूठा नाता तुड़ाईआ। जिस दा खेल लोक परलोकण, ब्रह्मण्ड खण्ड समाईआ। जिस दा गुर अवतार गाइण सलोकण, पीर पैगम्बर राग अलाईआ। जिस दा खेल कोट कोटन, कोट कोटी वेस वटाईआ। जिस दा रूप निर्मल जोतन, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जिस ने खेल बणाया गोबिन्द पुत्त पोतन, पतवन्त बेपरवाहीआ। सो देवण आया मोखण, मुकती चरनां हेठ दबाईआ। खेल कराया सत्तरां वेंहदिआं लोचण, लोचां पूर कराईआ। पिछला मिटावण आया रोसण, रुसयां लए मनाईआ। टिकाणे करन आया होशन, होछयां मत गवाईआ। गुरसिखां अन्दर लौण आया आपणा नाम रोशन, रोशनी इक्को नूर रुशनाईआ। देण आया दरगाह सच्ची दा सच्चा परमोशन, सीस ताज इक्क टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे रहण ख़मोशन, अग्गे बोल ना कोई सुणाईआ। करे खेल हरि बेहोशन, मख़मूर मख़मूरी इक्को नाम रखाईआ। लेखा जाणे दोश बदोशण, दोशीआं देवे दंड बदोशिआं लए बचाईआ। समुंद सागर वेखे ओशन, श्री भगवान आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ... ।

सत्तर सेवा सति दवार। सत्तर इट्टां हट्ट वणजार। इट्ट इट्ट नाल करे प्यार। चिट लाए नाल चरन धूढ़ी छार। देवे सिट, गुरमुखां थल्ले कर प्यार। गुरसिख चलदे फिरदे पैरां नाल मारन हिट्ट, नींह उखड़े जीव गवार। कदम कदम तुरदे तुरदे उत्ते रहे पिट्ट, हाहाकार करे संसार। करे खेल आप अनडिठ, कोई ना पावे सार । गुरमुख माणस जन्म लए जित, जिस जितया हरि निरँकार। धर्म दुआरे करना हित, भगतां होए प्यार। सत्तरां बहत्तरां चुहत्तरां विच्चों जो रहि गए पिच्छे पिच्छों करे अग्गे, सत्तर इट्टां कर विहार। आप फिरे पिच्छे अग्गे, अग्गे पिच्छे ख़बरदार। सति सरनाई जो जन लग्गे, सति पुरख निरञ्जण मेल मिलाए आपणी धार। सिफ़रा रूप सभ रह जाण हक़े बक्के, नज़र ना आए नर निरँकार। सत्तर भगत होए पक्के, पक्कीआं इट्टां दितीआं उखाड़। बहत्तरां छत्ती जुगाँ मारे धक्के, महल्ल अट्टल सुहाया इक्क दुआर। चुहत्तरां किहा असी भैण भाई सके, सतिजुग साची बंनी धार। पंज पंज पंज विच्चों रक्खे, चार चार वणज वपार। हरि संगत निक्के वड्डे बुढ्ढे नढ्ढे माई भाई धी जवाई पिच्छों फड़ करे अग्गे, अग्गे लाए आप निरँकार। सत्तरां इट्टां नाल एथे ओथे पर्दा कज्जे, एथे फर्श ख़ाकी ओथे मिले आप निरँकार। इस सेवा तों पिच्छे कोई ना बचे, तुहाढ्ढा महल्ल रिहा उसार। हरि का बचन सच सच्चे, सच सच करे गुफ़तार। जो एथे रह गए कच्चे, अग्गे कोई ना मददगार। बिन सतिगुर लक्ख चुरासी जीव नच्चे, अन्त कोई ना उतरे पार। गोबिन्द गुरसिखां कदी ना देवे धक्के, जिनां उतों आपणा आप दिता वार। पहली चेत वखाए आपणा खेल इक्ठे, अर्श फर्श हो त्यार। फेर कहे गुरसिख तुसीं मेरे बच्चे, मैं तुहाढ्ढा पिता पिता करां प्यार। जो साहिब मैनूं हुक्म दिता, मैं तुहानूं दिता सुणा। तुहाढ्ढे प्यार अन्दर निक्का, हँकार अन्दर वड बलकार। अग्गे चलौणा आपणा सिक्का, साची सिक्खी कर त्यार। सत्तरां इट्टां नाल वंड लउ हिस्सा, सचखण्ड बणे तुहाढ्ढा दरबार। जेहड़ा अजे किसे ना डिट्ठा, उस दी सेवा करे आप निरँकार। सौं ना जाणा दे के पिठां, बेख़बर करे ख़बरदार । वेखो अन्तम की निकले सिटा, सारे आपो आपणी थाईं दाउ रहे मार। कोई कहे जट्ट फिट्टा, जूठ झूठ रिहा मार। कोई कहे मन्दरां लवावे इट्टां, आपणा करे विहार। कोई कहे बाणा रक्खे चिट्टा, सीस सोहणी दस्तार। कोई कहे पावे पीला खट्टा, सीस ताज रक्ख करे शंगार। कोई कहे चूहड़िआं चमारां नालों मिटाई भिटा, कीता जन्म ख़वार। कोई कहे वड्डा हो के बणया निक्का, ग़रीब निमाणयां घर जा जा मंगे बणे दर भिखार। पुरख अकाल कहे मैं जन भगतां माता पिता, बिन पुतां पिता होए ख़वार। मेरा आदि जुगादी हिता, नित नवित्त मेरी कार। जिस नूं मैं पहलों डिट्ठा, सो मैनूं करे निमस्कार। बाकी सारा रस फिका, अमृत वहे ना कोई धार। की होया जे गोबिन्द कहे आ मेरे पुत्ता, गुरसिख गोदी लए उठाल। गुरसिख गोबिन्द दी गोदी रहे सुत्ता , पुरख अकाल चले नाल नाल । सच एदूं होर नहीं चंगी रुत्ता, ना कोई जल्वा ना कोई जलाल। श्री भगवान गुरमुख सच्चे हरि संगत विच्च कीते इक्ठे जिउँ अंगूरां वेल गुछा, मुढ टाहण इक्को इक्क रखवाईआ। कोई ना भुलिउँ उत्ते लै के बैठा धुसा, एह वी धुसा चेला सिँघ वडयाईआ। मैं फिर सुक्के दा सुक्का, हत्थ ना किछ रखवाईआ। जे कोई मैथों खोण आवे अग्गों वखावां मुक्का, सभ नूं मूंह दे भार सुटाईआ। दो जहान दा आया भुक्खा, सिँघ शेर बेपरवाहीआ। जे हो के वेखे उच्चा, अग्गों गुरसिख नज़री आईआ। गुरसिख

सभ दे नालों सुच्चा, जिस गोबिन्द मिल्या चाईं चाईंआ। गोबिन्द देवे साचीआं पुच्छां, सच सच समझाईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा लुका, आओ तुहाढ़े नाल दिआं मिलाईआ। जिन भन्नणा टोपी हुक्का, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। जिस हटौणा खाणा कुट्ठा, सीस धड़ ना कोई कटाईआ। सो साहिब सतिगुर तुठा, दीन दयाल फेरा पाईआ। रल मिल हो जाओ इक्को मुठा, गोबिन्द कर के गिआ पढ़ाईआ। फेर टंगे ना कोई पुठा, राए धर्म ना दए सजाईआ। जमदूत जे आइण नेड़े सिर विच्च मारो जुत्ता, ढोला गाओ सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साडा होए सहाईआ। गुरसिखो तुहाढ़ा पैंडा मुक्का, मुक्कया पन्ध लोकाईआ। मात गरभ ना उलटा रुखा, दस मास ना अगन तपाईआ। जिस दा सीस जगदीस झुका, तिस चुक खुशी मनाईआ। सत्तर बहत्तर चुहत्तर सुहाए इक्को रुत्ता, हरि संगत फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान किसे कोलों ना जाए लुट्टा, क्यों आपणा हट्ट ना किसे वखाईआ।

हट्ट लुट्टण दे पए झेड़े, चार वरन दुहाईआ। शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश बणे लुटेरे, शरअ कुहाढ़ी हत्थ उठाईआ। पीर पैगम्बर दस्सां केहड़े केहड़े, जेहड़े गए फेरीआं पाईआ। अन्त कोई ना पुजा डेरे, अद्धविचकार थक्क थक्क आपणीआं ढेरीआं ढाहीआ। सारे कलम शाही नाल टेटीआं रहे रेड़े, टिक्का मस्तक ना कोई लगाईआ। इक्क नानक आया खेड़े, गोबिन्द उंगली हरि फड़ाईआ। कबीर वेख्या आ के वेहड़े, आपणा कुण्डा लाहीआ। नानक गोबिन्द कहण प्रभ करे हक़ नबेड़े, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। कबीर कहे अग्गे भगतां नाल पाए झेड़े, तेरी भगती लोकमात ना किसे सखाईआ। जे किरपा करनी आं रातीं सुत्यां आ जाईं वेहड़े, औदयां जान्दयां तेरा की घट जाईआ । पिच्छे भगत रुलाए बथेरे, भाणे विच्च रखाईआ। अग्गे ना करीं झेड़े, झिड़कां दे ना जान सुकाईआ। पुरख अबिनाशी आ गिआ घेरे, किछ कह ना सके राईआ। कबीर मैं इक्क दस्सां जो जन ढोला गाए मेरे तेरे, तूं मेरा मैं तेरा उस दा होवां सहाईआ । कबीर कहे कोई ना जाणे तेरे केहड़े गेड़े, तुध बिन तेरा नाम कवण ध्याईआ। मैं नहीं मन्नणे तेरे हेरे फेरे, सच साची दे सुणाईआ । श्री भगवान कहे मैं जाऊं कर के वड्डे जेरे, लोकमात फेरा पाईआ । पिछले मेटूं सारे झेड़े, अग्गे झगड़ा ना कोई रखाईआ। वसां जा के गोबिन्द खेड़े, सम्बल दिआं माण वडयाईआ। ओथे शब्दी लावां डेरे, सोहँ ढोला गाईआ । फेर वेखां केहड़े केहड़े, जो मैनूं रहे ध्याईआ। दिने रातीं मारां फेरे, बण मरासी जजमानां घर जाईआ । घर जा के जां वेखां मैनूं सोहणे लग्गे चेहरे, गुरसिख चन्द करे रुशनाईआ। मैं खुश हो के कहां वीह सौ उन्नी बिक्रमी जेहड़े मिल गए उहो बथेरे, जिनां आपणे नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, दाता दानी वड मेहरवान, हरि भगतां मिले आपे आण, आपणी सेवा आप कमाईआ। (१६ मध्घर २०१६ बि)

सत दीप : सत्त रंग निशाना चढ़े, प्रभ साचा वेख वखाईआ। लक्खण दीप कर आकार, पुशकर जोत जगाईआ। करौच वेखे मार ध्यान, जम्बु डेरा लाईआ। सलमल तेरा धुंदूकार, आपे मेट मिटाईआ। सान रोवे ज़ारो ज़ार, वर मंगे भिच्छया अग्गे झोली डाहीआ। कुशा

कछ दए निवार, कलिजुग तोड़े गढ़ हँकार, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ । (२४ भादरों २०१४ बि)

जोती जामा हरि मलाह, नौं खण्ड वंड वंडाईआ। कुलाखण्ड प्रभ वेखे थां, इलाबुत संग रलाईआ। हरिवरख प्रभ ठंढी छाँ, किंपुरख आप दवाईआ। भारत खण्ड पकड़े बांह, निहकलंकी जोत जगाईआ। हरणयमह साचा नाउँ, एका जाप जपाईआ। केतमाल तेरा साचा राह, सोहँ साचा ढोला गाईआ। रमक राम रिहा समा, निशअक्खर शब्द जणाईआ। भदर भरम दए मिटा, साचा डंका इक्क वजाईआ। सत्तां दीपां लेखा लिखा, लिखणहारा आप अखवाईआ। सृष्ट सबाई पिता मां, लक्ख चुरासी गोद उठाईआ। आपे वेखे थाउँ थां, दिस किसे ना आईआ। लक्खण दीप उडे कां, प्रभ साची रचन रचाईआ। पुशकर नाता तुटे पिता मां, बाल बिरध सार ना राईआ। करौच वेखे साचा ना, गुणवन्ते लए उपजाईआ। जम्बु दीप पकड़े बांह, बीस बीसा दया कमाईआ। सान सुरती दए भुला, राज राजानां ख़ाक रुलाईआ। सलमल रोवे मार धाह, ना होवे कोई सहाईआ। कुशा दीप प्रभ वेखे थां, गुरसिख साचे लए जगाईआ। (१७ हाढ़ २०१३ बि)

सत रंग निशान : सच्चा हुक्म सच्चा फ़रमाण। गुरमुख साचे सच्च पछाण। सतिजुग झुल्ले सच्चा इक्क निशान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे बणत बणाए, सत्त रंग आप चढ़ाए, उत्ते तिन लेख लिखान। सत्त रंग प्रभ दए चढ़ाए। सत्तां दीपां लोअ कराए। जोती जोत सरूप हरि, दीपक जोती लए जगाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा सच्चा झण्डा आपणी हत्थीं आप बणाए।

सति धर्म हरि का बाणा। प्रभ आपणी हत्थीं आप बणाना। घनकपुर वासी किरपा कर साचे हरि, नाम डोरी नाल बंधाणा। फिर उपर जाए चढ़, चारों तरफ वेखे खड़, कोई ना दीसे किल्ला गढ़, सारयां उपर इक्क निशान रखवाणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सत्तां दीपां एका झण्डा एका डण्डा सोहँ शब्द रखवाणा।

साचा झण्डा दए चढ़ाए। विच्च वरभंडां होए रुशनाए। बेमुख पाउँदे झूठीआं वंडां, अन्त कोई रहण ना पाए। हरि वढ्ढी जाए सभ दीआं कंडां, धरत मात दे उत्ते सवाए। घर घर चारों तरफ दिसण नारां रंडां, सुहागी कन्त ना कोई हंढाए। हरि जी फड़या हत्थ सोहँ खण्डा, बेमुखां पार कराए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उत्भुज सेतज अंडज ज़ेरज सभनां विच्च समाए। (६ माघ २०१० बि)

पहली हाढ़ २०१२ बिक्रमी निशान साहिब वास्ते लिखत होई।

१७ हाढ़ २०१२ बिक्रमी गुर संगत दी चुरासी कट्टी अते निरविघन लंगर चलाया गिआ। सारे राजे महाराजिआं अते जगत गुरूआं, सन्तां नूं शब्द भाजी फेर के सद्दिआ गिआ मगर इस दिन उत्ते ना आए। केवल सन्त लाभ सिँघ, भगवान सिँघ सैदपुरों आए बाकी सारी हरि संगत सी।

सत्त रंग दा निशान साहिब दा झण्डा चढ़ाया। जिस दे उत्ते सत्तां दीपां दे नाम लिखे होए हन। जो सत्त रंग जोत दे प्रकाश नूं दस्सदे हन। झण्डा साढे तिन्न तिन्न हत्थ

चारों तरफ है। निशान साहिब चवीं हत्थ उच्चा है। एह काका जगदीश सिँघ दी ससकार वाली जग़ा बणाया है। हरि संगत सतारां हाढ़ नूं इक्ठी सी ते विहार कीता गिआ सी :-

सत्त रंग निशाना इक्क वखौणा, सत्तां दीपां आप झुलाया। लक्खण करौच पुशकर फेरा पौणा, जम्बु दीप होए रुशनाया। सान सलमल डेरा ढौणा, कुशा रिहा कुरलाया। लाल रंग हरि आप रंगौणा, आदि शक्त वेस वटाया। कंचन रूप इक्क सुहौणा, दीवा बाती इक्क डगमगाया। सूहा वेस नर नरेश आपणा आप करौणा, साची सखीआं मेल मिलाया। चिट्टी धार कर प्यार, चिट्टा रंग इक्क चढ़ौणा, दसम दवारी कुण्डा लाहया। रंग बसन्ती तन रंगौणा, फल फलवाड़ी वेख वखाया। नीला बसतर गोबिन्द धार हिंदू मुसलम इक्क बणौणा, साची बणत बणाया। काला सूसा तन छुहौणा, कलिजुग सत्थर रिहा वछाया। मुख नक़ाब पड़दा पौणा, कलिजुग जीवां दिस ना आया। ..... (१६ चेत २०१६ बि)

५ पोह २०२१ बिक्रमी दे हुक्म मुताबक ६ पोह तों २५ पोह तक हर रोज सवेरे साढे दस वजे सत्त रंग निशान चढ़ाया जांदा अते शांम सूरज छिपदे दी लाली नाल उतार लिआ जांदा। २६ पोह नूं सवेरे साढे दस वजे चढ़ा के फिर नहीं उतारया। :-

गुर अवतार पैगम्बर कहण इक्क वार, एको एक जणाईआ। असीं राह तक्कदे रिहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग चार, कोटन कोट काल ध्यान लगाईआ। धन्न सु वेला किरपा करी अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी खेल वखाईआ। ओस दे चरन कँवल करीए निमस्कार, धूढ़ी मस्तक टिक्का खाक रमाईआ। पंज पोह दा दिवस विचार, दह दिशा खुशी जणाईआ। इक्क इक्क दा इक्क प्यार, दूआ एका जोड़ जुड़ाईआ। साची किरपा करे आप करतार, करता बेपरवाहीआ । आपणा सत्त रंग निशाना देवे चाढ़, इक्की दिवस मात लहराईआ । इक्की दिन लोकमात गुर अवतार पीर पैगम्बर आउँदे रहण वार वार, बण बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी आसा पूर कराईआ। (५ पोह २०२१ बि)

श्री भगवान दिता इशारा, शब्द सच जणाईआ। वेखां खेल विच्च संसारा, लोकमात कर रुशनाईआ। बताली साल दा तेरां पोह दा एह दिहाढ़ा, पूरब लेखे लाईआ। गुरमुख तेरी सुण पुकारा, जन भगतां दए वडयाईआ। अज्ज तों अग्गे जेहड़ा गुरमुखां घर होए विहारा, उस दी रीत इक्क दरसाईआ। उह गुरमुख सुच्चा हत्थ फड़े इक्क निशाना, सत्त रंग नज़री आईआ। उस दा वसदा रहे मकाना, सतिजुग सारे लभ्भण चाईं चाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वड देवे माण वडयाईआ। (१३ पोह २०२१ बि)

सत्त रंग निशाना कहे मैनूं आया ख़िआल, पिछला हिसाब जणाईआ । हमेशा एह गोबिन्द सत्तां रंगाँ दे रक्खदा सी रुमाल, आपणीआं जेबां विच्च टिकाईआ। इक्क नालों दूजे दी चंगी करदा संभाल, दूजे नालों तीजा तीजे नालों चौथा चंगा बणाईआ। पंजवें दा पुच्छ के आपे हाल, छेवें दा लहणा मूल चुकाईआ। सत्तवें नूं समझा के आपणा इक्क सवाल,

धुर दा हुक्म सुणाईआ। तुहाढ्ढी सेवा करन गोबिन्द बाल, पहलों आपणा आप भेट चढ़ाईआ। जिन्नां नूं नीहां हेठां देणा सवाल, फेर माण ताण वडयाईआ। मेल मिला के नाल पुरख अकाल, सचखण्ड दवारे देवां वडयाईआ। उह कलिजुग अन्तम सेवा करन विच्च जहान, लोकमात फेरा पाईआ। सच निशान बणा के विधान, धर्म धारा इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल उठाईआ।

सत्त रंग निशाना कहे भीलणी दे एन्नां विच्चों पंज रंग, जिस दी अंगी लई बणाईआ। ओन्नां विच्चों दो राम दी आए वंड, जो आपणे हत्थ रखवाईआ। लाल धनुश नाल रक्खया सी बंन्न, चिट्टा आपणे सज्जे गुट नाल रखवाईआ। ओस वेले औंदा इक्क अनन्द, जिस वेले भगत भगवान दोवें मिल के आपणे नाल छुहाईआ। इक्क दिन असां सत्तां मंग लई मंग, झोली अग्गे ढाहीआ। साडी कड्ढी कर दिउ गंढ, कुतरां दी रहे ना कोई जुदाईआ। राम ने किहा तुहाढ्ढी आसा पूरी होवे निशंग, निसचे नाल लैणा ध्यान लगाईआ। जिस वेल आवे सूरा सर्बंग, लोकमात वेस वटाईआ । उस दे कोल तुहाढ्ढे कठयां करन दा होवे ढंग, साढे तिन्न हत्थ तुहाढ्ढा रूप लए बणाईआ। जेहड़ा गिआ छड्ड पुरी अनन्द, ओसे चन्द लए चमकाईआ । तुहानूं आपणे हत्थां नाल लए टंग, चवी हत्थ वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वडयाईआ।

सत्तां विच्चों इक्क रुमाल, जो गोबिन्द हत्थ उठाईआ। जिस नाल मुख पूंझिआ सी महां सिँघ लाल, प्रेम प्रीत जणाईआ। ओस कीता अग्गों इक्क सवाल, गोबिन्द सीस निवाईआ। असीं तेरे तन नाल छोहण वाले विच्च जहान, लोकमात की सानूं मिले वडयाईआ। साडी फेर किस तरा होवे पछाण, जिन्नां नूं गोबिन्द आपणे कोल रखवाईआ। गोबिन्द किहा मेरा श्री भगवान, तुहाढ्ढा लेखा लेखे लए लगाईआ। जिस वेले कल कलकी आए नौजवान, निरगुण आपणा वेस वटाईआ । तुहानूं सभ नूं कड्ढा करे आण, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। फिर गोबिन्द दे सिर ते ताज तुसां झुलणा नाल जहान, दोहां दा निशान इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सत्त रंग कहण जिस वेले बल कीता सी जग्ग, असमेध मात रचाईआ। ओस विच्च साडे समग्री बध्धी सी अड्ड अड्ड, वंडां सत्त सत्त कराईआ। जिस वेले ब्रह्मण बावन हो के बैठा आपणा निशाना गड्ड, दर दवारिउँ बाहर डेरा लाईआ। ओस ने मंगी इक्क मंग, धरत ढाई कर्म मिणाईआ। बल ने उस वेले सभ कुछ दिता छड्ड, साडी वस्त विच्चों किसे ना भेट चढ़ाईआ। असां सभ नूं मिल के दिता आख, इक्क आवाज़ लगाईआ। साडा कीहदे नाल साथ, सच दिउ समझाईआ। ओस ने किहा तुहाढ्ढा मालक पुरख समराथ, जो कलिजुग अन्तम फेरा पाईआ। उह तुहाढ्ढा पड़दा लवे ढाक, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ। इक्क दूजे नाल जोड़ के तुहाढ्ढा नात, कड्डयां दए कराईआ। फेर वखावे भगतां इक्क जमात, जो इक्को नाम ध्याईआ। फिर नज़रीं आए साख्यात, जोती जाता नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहाढ्ढा लेखा दए चुकाईआ।

सत्त रंग कहण सानूं पहलों रंगया आदि शक्त, आपणी सेवा लाईआ। साडे विच्च पा के आपणी बरकत, दिती माण वडयाईआ। फेर असीं कर के आपणी हरकत, हौली हौली भज्जे वाहो दाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग करदे रहे कसरत, बलधारी

हो के आपणा नाउँ प्रगटाईआ। लोकमात करदे रहे ऐशो इशर्त, अयाशगाह विच्च समाईआ। जिस दी करनी ओसे तों गए बिछरत, आपणा आप भुलाईआ। जिस वेले राम बेटा दशरथ, जनक सपुत्री गिआ परनाईआ। ओस वेले सानूं आई इक्क हसरत, आपणा ख़िआल दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

सत्त रंग कहण सानूं जनक सपुत्री बध्धा नाल धनुष, अड्डो अड्ड दिता रंगाईआ। लागे रक्ख के छोटा जिहा संख, आपणी खेल वखाईआ। जिस वेले राम नूं आई अणख, उठया बल प्रगटाईआ। हौली जिही लाई तनक, असीं सुत्ते हिल्ले वाहो दाहीआ। ओस दी अक्ख दा निशाना साडे उत्ते पिआ इक्क पलक, जो मेहर नज़र तकाईआ। असां हो के किहा तलख़, क्यों सानूं दिती जुदाईआ। ओस तक्क के किहा उत्ते फ़लक, इशारे नाल समझाईआ। जिस वेले मेरा कुल मालक आया ख़लक, हरि ख़ालक वेस वटाईआ। ओस दी नूरी रूप वाली आ जाए डलक, जोती जाता इक्क अखवाईआ। तुहानूं कठयां नूं कट्ठा कर के आप बणे बंधप, सज्जण इक्क अखवाईआ। नाल मिला के आपणी संगत, हरि संगी दए जणाईआ। दे के माण विच्च जेरज अंडज, उत्भुज सेतज खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सत्त रंग देवे माण वडयाईआ।

सत्त रंग कहण जिस वेले नानक गिआ बगदाद, बगदादी रूप वटाईआ। ओथे पीरां ने सत्ते रंग एनूं दिती दात, वारो वारी टल्लीआं टाकीआं हत्थ गए फड़ाईआ। ओस ने किहा इन्हां दा मालक रसूल पाक, इतफाक नाल लए मिलाईआ। आप बणे शाह नवाब, जो शहनशाह अखवाईआ। सिर रक्खे अगम्मा ताज, पंचम मुख मिले वडयाईआ। सत्तां दा मालक बण के आप, कठयां दए कराईआ । जिस दा हुक्म ओसे दा राज, निशाना आपणा लए बणाईआ। नानक किहा जो मेरे अंगन गए लाग, दूजे दर ना मंगण जाईआ।एह सतिजुग दा सच्चा रवाज, जो हिंदू मुस्लिम इक्को रंग चढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

सत्त रंग कहण जिस वेले गुरू अरजन रक्खी टेक, गुरू ग्रंथ रिहा लिखवाईआ। ओस वेले असीं सत्ते होए उस दे पेश, दर आपणा आप भेट चढ़ाईआ। साडे सत्तां अन्दर ओस ने सतिनाम लिख के रक्खया लपेट, सत्त दिन बाहर ना फेर कढ़ाईआ। फेर इक्क वणजारे कोल दिता वेच , साढे तिन्न तिन्न टक्के कीमत साडी पाईआ। उह वणजारा सी इक्क शेख़, जिस दा जन्म जागीर सिँघ रूप वटाईआ । इस दे विच्च कोई भेत, जिस ने तत्ती रेत सीस टिकाईआ। ओसे दी अज्ज खेड, खिलाड़ी हो के वेख वखाईआ। सत्त रंग निशाना कहे मैं सभ दे कोल हुंदा रिहा पेश, वड्डा छोटा आपणा रूप बणाईआ। बिन पुरख अकाल मेरा किसे ना लिखया लेख, मेरा सच्चा जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। मैं ओसे कर के उहदे भगतां नाल करां हेत, जिस मेरी बणत बणाईआ। चार जुग मेरी गई ना कोई पेश, दूर दुराडा बह के मुख छुपाईआ। किसे ने मन्नया शंकर किसे ने गणेश, किसे ने ब्रह्मा किसे ने विष्नूं किसे ने देवतयां दिता सीस निवाईआ। मैं सभ नूं जुग जुग रिहा वेख, प्रभ एह की रचन रचाईआ। जिन्हां नूं तूं आप देवें भेज, लोकमात तेरी करन वडयाईआ। जे तूं मालक कुल दा भगतां दी माण सेज, आत्म अन्तर आसण लाईआ। पड़दा लाह के

आपणे देस, परदेसीआं आपणे घर वसाईआ। मालक हो के धुर दा नरेश, नर नरायण दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ। सत्त रंग कहण असीं सभ दे सांझे, कहाणी सच दईए सुणाईआ। साडे विच्चों चार रंग हंढाए हीर ते रांझे, आशक माशूक खुशीआं विच्च समाईआ। दोहां रंगाँ विच्च चेले गुर समांदे, चैलंज करन लोकाईआ । सत्तवें रंग विच्च जुग जन्म दे थक्के मांदे, बह बह डेरा लाईआ । जिस वेले सत्त रंग अल्ला राणी बंन्हे आपणे नाल परांदे, मैंहदी हत्थां नाल रंगाईआ। ओस दे नैण दोवें शरमांदे, अक्ख पलक ना कोई उठाईआ। चौदां तबक एह राग गाँदे, वाहवा परवरदिगार तेरी वडयाईआ। तारे चन्द नैण शरमांदे, सूर्या बैठा मुख भवाईआ। वेखे खेल दो जहान जहां दे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

लाल रंग कहे जिस वेले अल्ला राणी मैनूं बध्धा नाल गुत्त, वालां विच्च दिता टिकाईआ। मैं उसे वेले लिआ पुच्छ, की तेरी चतुराईआ। ओस ने किहा एह खेल अबिनाशी अचुत, जो मैनूं रिहा समझाईआ। सदी चौधवीं तैनूं आपणे नाल लए चुक, ज़िमीं तों आसमानां उपर चढ़ाईआ। जगत जहान दा बदल देवे रुख़, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रुख़सत दे के आपणे घर छुट्टी देवे मनाईआ। भगतां नाम भंडारा दे के मुफ़त, सूफ़ीआं आपणा रंग चढ़ाईआ। वेखीं ओस वेले ना होवीं सुसत, झुल्लीं वाहो दाहीआ। तैनूं फड़नां छोटे बाले चुस्त, जो सत्त महीने तिन्न दिन लोकमात गिआ हंढाईआ। एह प्रभू दा हुक्म दरुसत, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सभ ने आपणी करनी लैणी भुगत, बिन भगतां भगवन जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा सरनाईआ।

सत्त रंग कहण जिस वेले तेग़ बहादर गिआ दिल्ली, दलील आपणी इक्क बणाईआ। ओस वेले औरंगे दा मजौर आया इक्क शेख़ चिल्ली, सत्तां रंगाँ वाली चोली गल विच्च पाईआ। थल्लउँ तंबी रक्खी ढिल्ली, पैरां विच्च खिचाईआ। हत्थ फड़ के चिट्टे रंग दी बिल्ली, आया नाच कराईआ। नच्चे टप्पे कुद्दे पावे जली, ढाई हत्थ दी मतैहर रिहा भवाईआ। नाले बोले अली अली, अल्ला तेरी बेपरवाहीआ। तेग़ बहादर गोबिन्द तेरे बाग़ दी निक्की जिही कली, क्यों करन लगा जुदाईआ। परवरदिगार तेरा वली छली, जो तेरे नाल धोखा रिहा वखाईआ। तूं शहनशाह दवारे माणीं आपणी रंग रली, ईमान आपणा लैणा बणाईआ। फेर तैनूं सारे कहणगे बड़ा वली, वली अहिद तेरी सेव कमाईआ। ओधरों बिल्ली हो के झल्ली, अगले पंजे मथ्थे उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ।

तेग़ बहादर किहा ओ मलंग सत्त रंगे, तैनूं दिआं जणाईआ। औह वेख भज्जे औंदे फरंगे, आपणा पन्ध मुकाईआ। तुहाड्ढे मतैहर रह जाण टंगे, भज्जो आपणी पिठ वखाईआ। तेरे फरेबां वाले रंग जो कमर उत्ते बंन्हे, एह रो रो देण दुहाईआ। एह रोंदे मैनूं लग्गे चंगे, जेहड़े बिरहों विच्च कुरलाईआ। मैनूं अैं दिसदा जिस तरां सतिजुग विच्च श्री भगवान ने एह बणौंणे सति धर्म दे झण्डे, झण्डा आपणे संग रखवाईआ। तुसां रहणां रंडिआं दे रंडे, सुक्की रोटी ते खाण नूं गंढे, एहो वस्त तुहाड्ढे हिस्से आईआ । जिस वेले आवे रावी कन्ढे, रावीउँ परे तुहाड्ढा मुख भगतां दा दुःख आपणी झोली पाईआ। प्रेम भगतां कोलों

लवे धुर दी दात मंगे, भगतां देवे आपणा खेल वखाईआ। फेर बह के इक्क खटीआ उत्ते मंजे, मजलस आप लए लगाईआ। जेहड़ी अक्ख थोड़े समें वास्तो मिली सी संजे, महांभारत वेखे आपणा नैण उठाईआ। ओस दे नालों गुरमुख कर लए चंगे, नेत्र दोहां दे विच्चों नैण नाल मिलाईआ। राह विच्च औदयां नाले तोड़े नाले गंढे, पा के गंढ ठंड फेर वरताईआ। नाल गुरमुख नूं कहे सानूं राह ला चंगे, रस्ता इक्क जणाईआ। आ के रावी दे उरार कन्ढे, कन्ढी वाला वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

सत्त रंग कहण असीं रहे रुड़दे, फड़ के कट्ठा ना कोई कराईआ। साडे अन्दर फुरने रहे फुरदे, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। कईआं ने साडे विच्च दब्बे मुरदे, कफ़न बणा के उत्ते दिता टिकाईआ। बिन प्रभ दी किरपा असीं कट्ठे हो ना जुड़दे, इक्क गंढ ना कोई पवाईआ। किरपा करी जिस वेले मालक धुर दे, साडा मेला लिआ मिलाईआ। हुण असीं दो जहानां फिरीए उडदे, शाह सुलतानां दईए जगाईआ। जन भगतो तुसीं क्यों नहीं कट्ठे हो के तुरदे, वेखो तुहाढ्ठे सामुणे असीं खलो के दईए गवाहीआ। असीं पूरब विछड़े चिर दे, प्रभ मेला लिआ मिलाईआ। जिस तरां असीं मालक बण गए धुर दे, जगत चीथड़ मिली माण वडयाईआ। तुसीं ते माणस तुरदे फिरदे, क्यों ना चल के दर्शन पाईआ। एहो जिहे समें मौके फेर नहीं जुड़दे, नाले गोबिन्द नाले हरि जू घर हरि मन्दर दए बणाईआ। जेहड़े दर ते आए उह खाली कदे नहीं मुड़दे, खाली भाण्डे दए भराईआ। जिस वेले गुरमुख आपणे कदमां नाल होण तुरदे, ओस वेले सतिगुर वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग अन्तम खेल करे आपणी लोड़ दे, आपणी गर्ज़ खातर तुहाढ्ठी सेव कमाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे मुकाए अन्धघोर दे, इक्को नूर कर रुशनाईआ। (१५ पोह २०२१ बि)

सत्त रंग कहण सानूं करे इक्ठा, लड़ी लड़ी नाल बंधाईआ। जन भगतां लेख चुका के तत्त अठां, चरन सरन दए वडयाईआ। नौ दवारे पार करा के चुक्के आपणे हत्थां, सेवक हो के सेव कमाईआ। जन भगतां पुरख अबिनाशी घट घट वासी वेखे आपणीआं अक्खां, आख़र अख़ीरी आपणा मेल मिलाईआ। मैनूं माण दवाए घर घर कुल्ली करवां, धुर दा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक्क लगाईआ। सत्त रंग कहण साडा जोड़ जुड़ाया, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। भगतां आसा मनसा पूरी लोड़ कराया, साची रचना नाल रखवाईआ। सस्से उपर होड़ा इक्क लगाया, हाहे टिप्पी दए वडयाईआ। साजण बणके फेरा पाया, निरगुण रूप धराईआ। राजन बणके मैनूं रिहा झुलाया, दो जहानां हुलारा इक्क रखवाईआ। सन्त सुहेले रिहा तराया, गुरमुख वजे वधाईआ। गुरसिख मिल मिल मंगल गाया, गीत गोबिन्द अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

सत्त रंग कहण सानूं नापया नाल फ़ीता, नौ नौ इंच साडी वंड वंडाईआ। वड्डिआई दे

के घर अतीता, त्रैलोकी दा मालक दिता बणाईआ। साथ कलमा दस हदीसा, सोहँ ढोला दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्शी इक्क सरनाईआ। सत्त रंग कहे मेरे उत्ते इक्क जैकारा, हरि करता आप लगाईआ। जो भगतां लगे प्यारा, गुरमुखां मुख सलाहीआ। सिखां दए अधारा, सन्तां माण वडयाईआ। कूड़ी क्रिया करे खुआरा, सच सुच राह समझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा बणके सेवादारा, धुर दी सेव कमाईआ। (१६ पोह २०२१ बि)

सतारां हाढ़ : दयावान दयाधार, दयाधार दया कमाइंदा। पूरन जोत हरि भगवान, मात जगाइंदा। इक्क झुलाए धर्म निशान, साची रंगण रंग रंगाइंदा। सत्तां दीपां एका आण, साचे सन्त हरि बणाइंदा। गुर संगत मंगण आया दान, बाल निधाने मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर, सतारां हाढ़ी गुर संगत मात फुल फुलवाड़ी आपणी हत्थीं मात लगाइंदा। (१७ हाढ़ २०१२ बि)
हाढ़ सतारां सति है, संगत पूत उपनया। एका जोग जगत सच्च वत है, हरि भाणा हरि हरि मन्नया। एका ताणा पेटा नाम साचा सूत है, कलिजुग अन्तम बेड़ा बंन्निआ। शब्द जैकारा चारों कूट है, जोती साचा चढ़या चंनया। गुरमुख विरला शब्द पंघूड़ा रिहा झूट है, भाण्डा भरम भउ तन भंनया। नौं खण्ड पृथ्मी तीर निराला रिहा छूट है, ना दीसे आत्म अंन्निआ। कुलाखण्ड इलाबुत हरिवरख किंपुरख भारत खण्ड पाए वंड, हरणयमह केतमाल रमक भदर गुरमुखां आत्म लाए संन्निआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, नौं खण्ड पृथ्मी देवे डंनया।
दस सत सतारां सति है, हाढ़ सतारा रीत। गुर शब्द जणाए धीरज जत है, काया करे पत्तित पुनीत। नाम वड्डिआई कमलपत है, आप वसाए काया मन्दर मसीत। नाड़ बहत्तर उबली रत्त है, हसत असत शसत बणाए कीट। गुरमुख विरला लाहा लए खट्ट है, मानस देही जामा जीत। रसना नाउँ नरायण रट है, अठ्ठे पहर राखे चीत। दूई द्वैती मेटे फट्ट है, नेत्र लोचन दोवें मीट। आपे दिसे घट घट है, शब्द जणाए सुहागी गीत। जोती नूर उजाला लट लट है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सति सतिवादी इक्क अतीत। (१७ हाढ़ २०१३ बि)

हाढ़ कहे मैं भगतां अगे कढणा हाढ़ा, बौहड़ी कर के देणा सुणाईआ । जन भगतो वक़त संभालो सतारां हाढ़ा, वेला गिआ हत्थ ना आईआ । इक्क दिन पिच्छे अगे रुलणा ना पए उजाड़ा, जन्म जन्म ना कोई भुआईआ। मेल मिल जाए धुर दे लाड़ा, साचा नाता लए जुड़ाईआ । मंज़ल पार होए दुष्वारा, दुशमन दूती डेरा ढाहीआ। मेल मिले इक्क निरँकारा, निरगुण निरगुण विच्च समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां दा बण प्यारा, भगवान हो के भाग उहनां दी झोली पाईआ। (१ हाढ़ श सं १)

सतारां हाढ़ दा दिवस महान, महिंमा अगणत गणी ना जाईआ। (१७ हाढ़ श सं ८)

सति सरूप : साचा प्रभ सच सति सरूप । जोत सरूपी प्रभ जोत सरूप । (२० मध्घर २००६ बि)

प्रगट होया डाहढा गुर भूप। जिस ने मारे आप दुष्ट दूत। महाराज शेर सिँघ सति सरूप। (५ चेत २००७ बि)

सति सरूप सांत हो के जिस सीस पवाई रेत, सच सरूप गिआ समाईआ। (२२ जेठ २०२१ बि)

निरगुर निरवैर निराकार सति सरूप किसे नज़र ना आए साख्यात, साख़ीआं पढ़ पढ़ सारे रहे सुणाईआ। (१७ सावण २०२१ बि) (करतार)

गुरमुख विरला जाणे प्रभ रंग अनूप। जोत निरञ्जण निहकलंक सति सरूप। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, सोहँ शब्द तेरा साचा दूत। (१ माघ २००८ बि)

नेहकलंक महिंमा अनूप। निहकलंक सति सरूप। निहकलंक बिन रंग रूप। निहकलंक जोत सरूप। (१ सावण २००६ बि)

निरवैर पुरख अकाल ठाकर सुआमी सति सरूप, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सुणाए धुर फ़रमाणिआ। (११ माघ २०१७ बि)

शब्द गुरू गुर दाता एक, आदि जुगादि उपाइंदा। श्री भगवान देवे टेक, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी लए वेख, निरगुण सरगुण कार कमाइंदा। आत्म परमात्म कर कर हेत, हितकारी मेल मिलाइंदा। अन्तर अन्तर खोल्हे भेत, भेव अभेदा आप जणाइंदा । निज सरूप लए वेख, सति सरूप भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर शब्द रंग रंगाइंदा। (२४ चेत २०२० बि)

काया अन्दर सति सरूप, सतिगुर बैठा आसण लाईआ। वेखणहारा अन्ध कूप, दह दिशा फोल फुलाईआ। अठ्ठे पहर सुत्ता रहे घूक, बिन गुरमुखां सके ना कोई जगाईआ। मन वासना सभ नूं रही फूक, घर घर अगनी रही लाईआ। बुद्धि रोवे कुरलावे मारे कूक, उच्ची उच्ची दए दुहाईआ । मेरी कोई ना चुकावे चूक, हत्थ नाल हत्थ ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शानती इक्को घर वखाईआ। (१२ जेठ २०२० बि)

निरगुण मन्दर निरगुण दुआर, निरगुण सति सरूप आसण लाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए समझाईआ। (२६ जेठ २०२० बि)

साची कार करे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर थाप, वेखणहारा वेखे चाईं चाईंआ। पिता पूत बणाए वड प्रताप, आप आपणा नूर उपजाईआ । सुत दुलारा

शब्दी साक, सज्जण इक्को इक्क अखवाईआ। गृह मन्दर खोल्ह ताक, घर साचे दए बहाईआ। मेहरवान हो अलक्खना अलाख, अलक्ख इक्को इक्क जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे साथ, सगला संग निभाईआ। सचखण्ड दवार पावे रास, थिर घर आपणा नाच नचाईआ। परम पुरख प्रभ खेल तमाश, आपणा आप वखाईआ। धुर दा भेव खोल्हे ख़ास, बिन हरि समझ किसे ना आईआ। जिस वेले रचना रची आदि, सो साहिब ख़ुशी मनाईआ। ख़ुशी विच्च दिती दाद, आपणी झोली आप भराईआ। तूं मेरा मैं तेरा मेरी तेरी भुल्ले कदे ना याद, सति सरूप सोहँ धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। (१ सावण २०२० बि)

सभ दा शब्द गुरू दलाल, पंज तत्त आवे जावे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे दो जहान, सर्ब सृष्ट देवणहार इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म सोहँ रूप सति सरूप सति सतिवादी आप समझाईआ। (७ अस्सू २०२० बि)

किरपा कर श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलिजुग अन्तम जन भगतां देवां साचा दान, लक्ख चुरासी ख़ाली हत्थ फिराईआ। जिन्हां अन्तर देवां धुर निशान, सोहँ सति सरूप समझाईआ। सो गुरमुख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै सारे गाण, तिन्हां सचखण्ड मिले वडयाईआ। खाण पीण भोग पशू पंछी जीव जंत सर्ब करन कमाण, एथे ओथे देवे माण ना कोई वडयाईआ। साहिब सतिगुर तुठ जिस देवे आपणा ज्ञान, सो जीअ होए परवान, जीव साचे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जुग जन्म दा लेखा पूरब सर्ब चुकाए आण, अरब खरब जन्म जन्म आत्म आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ। (२३ अस्सू २०२० बि)

नाम कहे मैं बेपरवाह, बेपरवाही विच्च समाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग बणां मलाह, खेवट खेटा हो के बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा । शब्दी हो के देवां सलाह, अक्खरी हो के लेख लिखाइंदा। वक्खरा हो के बैठां मुख छुपा, नज़र किसे ना आइंदा। कलिजुग अन्तम प्रभ किरपा कीती आ, आप आपणे संग लिआइंदा । नाता जोड़ सहज सुभा, सोहणी बणत मात बणाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गा, नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। जन भगतां दिता समझा, सोहँ रूप सति सरूप पुरख अकाल आत्म परमात्म आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे रंग रंगाइंदा। (२१ जेठ २०२१ बि)

सतिसंग : साचा संग प्रभ का जाण। आपणा आप जीव पछाण। साचा संग वाली दो जहान। देवे वड्डिआई विच्च मात आण। साचा संग भगत भगवान। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई आण।
साचा संग प्रभ बणाए। गुरमुख साचे आण तराए। साचा संग तोड़ निभाए। टुट्टी गंढे

फिर टुट्ट ना जाए। साचा संग गुर अंग लगाए। मानस जन्म ना भंग कराए। साचा संग गुर सतिसंग रलाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान होए सहाए।

साचा संग घर दर दिखावे। पूरा गुर बूझ बुझावे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ चुकावे। साचा संग मानस जन्म सुफल करावे। मात कुक्ख विच्च फेर ना आवे। साचा संग थिर घर निवास रखावे। साचा संग आवण जावण गेड़ कटावे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब सुखदाए साचा कर्म कमावे। साचा संग गुर पूरा करे। चरन लाग गुरसिख तरे। साचा संग आत्म वास करे हरे। सोहँ स्वास स्वास जप जीव कलिजुग पार तरे। साचा संग एका नर हरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिख तेरा मूल ना डरे।

साचा संग प्रभ संग संगीत। अतम देवे चरन प्रीत। साचा संग गुर मानस जन्म जग जीत। साचा संग प्रभ आत्म सदा अतीत । साचा संग साचा प्रभ साचा सति मीत। साचा संग मानस जन्म ना होवे भीत। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरन लाग लक्ख चुरासी जावे जीत।

साचा संग गुर गुरमुख। आत्म उतरे सारी भुक्ख। साचा संग गुर साजण सुख। साचा संग दर घर आए नेत्र पिख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे साची देवे सिख। साचा संग सच परीख्या। गुरमुख साचे साचा प्रभ साचा देवे सीख्या। साचा संग कर दरस आत्म मिटे तीख्या। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ दान पावे भीख्या। साचा संग भगत संग। आप निभावे आपणा संग। साचा संग अमृत नीर वहावे गंग। शब्द नाउँ पार जाए लँघ। साचा प्रभ सच दान दर मंग। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सहाई अंग संग।

साचा संग सच कर माण। आपणा आप जीव पछाण। साचा संग साचा माण ताण। सतिगुर साचा जाणी जाण। साचा संग वेख वखाण । होए निमाणा जन चरनी डिगे आण। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सति सति कर जाण।

साचा संग सतिगुर सति साचा देवे साची मत। साचा संग साचा सति, सतिगुर साचा साची रक्खे पत्त। साचा संग इक्क रखावे साचा सति। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेला गिआ ना आवे हत्थ।

साचा संग वक्त संभाल, चरन प्रीती निभे नाल। साचा संग गुरसिख साचे पाल, देवे वड्डिआई दीन दयाल। साचा संग महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। साचा संग गुरसिख दीआ। अमृत नाम महांरस पीआ। आत्म जोत जगाए प्रभ दीआ। पूरब लहणा प्रभ साचे दीआ। गुरमुख साचे प्रभ दर लीआ। सोहँ साचा बीज आगे बीआ। प्रभ मिलन का आप बणाया साचा हीआ। गुरमुख साचे सचखण्ड रखाई तेरी नीआ। एका जोत एका आत्म जगाया दीआ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साचा नाम गुर दर पीआ। (६ जेठ २००६ बि)

गुर अवतार पीर पैगम्बर उठ के लउ तक्क, निरगुण हो के लउ अंगढ़ाईआ। सभ दा लेखा मुक्कया हकीकत हक़, निझ नेत्र अक्ख मात ना कोई खुल्ह़ाईआ। दीनां मज़्बां ज़ातां

पातां कर्मां कांडां विच्च गए फस, माया ममता मोह वधाईआ। जो आत्म परमात्म मिलण दा मार्ग आए दस्स, सुरती शब्द ना कोई जुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरानां सारे करदे पाठ, हवन आहुती दे दे घृत सुगंधी रहे जणाईआ। फिर फिर थक्के तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरसती अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ गुरदवारयां अन्दर करन इक्ठ, सतिसंग ला ला करन पढ़ाईआ। अन्दर वड़ के मन्दर चढ़ के मनूए उत्ते लाए कोई ना सट्ट, सोई सुरत ना कोई उठाईआ। चारों कुण्ट साधां खोल्हे हट्ट, बण वणजारे नाम वरताईआ। श्री भगवान किसे ना आया हत्थ, ख़ाली हत्थ देण दुहाईआ। रसना वाला अक्खरां नाल गाउँदे जस, वटणा प्रेम रंग ना कोई रंगाईआ। सच प्रीती जुड़या किसे ना नत, नौ दवारे पार करके हद्द, इंड पिण्ड ब्रह्मण्ड डेरा पार ना कोई कराईआ। चार यारी नाल मिल मिल करन संग, पंचम बह बह ख़ुशी मनाईआ। भरमां वाली ढाह ना सके कंध, दूई द्वैत ना कोई चुकाईआ। बिन भगतां आत्म परमात्म नाल मिल के सोहँ कोई ना गाए छन्द, संसा सके ना कोई मिटाईआ। जगत वड्डिआई दा सारे माणदे अनन्द, निजानंद ना कोई समाईआ। शब्दी डोरी तुट्टा तन्द, सुरती बंधन कोई ना पाईआ। घर स्वामी लाए किसे ना अंग, जगत दोहागण दए दुहाईआ। मास खलड़ी लहू मिझ रत्त पा के वंड, हिसयां वेख वखाईआ। जो मालक ख़ालक सभ दा दाता गुणी गहिंद, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। सदा आत्म सेजा सुत्ता रहे पलँघ, जग नेत्र नज़र कोई ना पाईआ। जिस वेले सतिगुर पूरे दा होवे संग, सगला लेखा दए मुकाईआ। ओथे कर्म कांड सारे करके खण्ड, जगत क्रिया दए मिटाईआ। घर सुहागण नार कर देवे अग्गे ना होवे रंड, अग्गे दा रंडेपा दए मुकाईआ। इक्को गीत सुणा के आपणा छन्द, लेखा मन्दर मसीत दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। (१३ मध्घर २०२१ बि)

सुरती कहे गुरमुखो जे करना होवे सच्चा सतिसंग, संगत रूप वटाईआ। पूरे सतिगुर तों पैहलों इक्क मंग लउ मंग, प्रेम प्रीती आपणी झोली पाईआ। चरन धूड़ नहाओ गंग, दुरमत मैल धवाईआ। प्रेम प्यार दा गाओ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। आपणे अन्दर उस दा डाहो पलंघ, साथी साचा लउ बणाईआ। फिर नौ दवारे साचे जाओ लंघ, अद्ध विच्च ना कोई अटकाईआ। सुणदे जाओ सुणांदे जाओ अगम्मी छन्द, जो सहिंसा रिहा मुकाईआ। अन्धेर गुबारे अगे वेखो नूरी चन्द, सूरज बारां नहीं कोटन कोट नूरां दा नूर नज़री आईआ। एह इक्क दो ते गिआरां, एह निक्कयां निक्कयां साधां सन्तां दीआं वारां, बारां सूरज इक्क महापुरुषां दा निक्का जिहा इशारा, उस तों अगे वड्डा दवारा, जिथ्थे बैठा हरि निरँकारा, कोटन कोट आत्मा परमात्म आपणे रंग विच्च रंगाईआ। कोटन कोट वसदे गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर सयदे करन कर कर निमस्कारा, भगत भगवान इक्क दूजे नाल करन प्यारा, गुरमुख जोती जोत नूर करन उजिआरा, गुरसिख वेखण बिना पवण अगम्मी हुलारा, पुरख अकाल दीन दयाल धुर धामी शब्द इनामी निहकर्मी सभ दा मरमी, आदि जुगादी धर्मी, साची बख्शे इक्क सरनी, सुरत सवाणी मिलाए शब्द हाणी, लेखा चुकाए जगत जहानी, पार लंघा के पद निरबाणी, जोत आपणी विच्च मिलाईआ । (१३ चेत श सं १)

भेव चुक जाए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा रूप अनूप दए दरसाईआ । झगड़ा मुक जाए हड्ड मास नाड़ी चंम, दूई द्वैत रहण कोई ना पाईआ। लेखा मुक जाए हरख़ सोग चिन्ता ग़म, खुशी इक्को दए प्रगटाईआ। उह सति संगत सचे सतिगुर दा आदि जुगादि दा कम्म, करनी दा करता आप कराईआ। माया ममता मोह हँकार विकार मेट देवे पंज तत्त तन, हउमे हंगता रहण ना पाईआ। जिस सतिसंग नूं सुण के फेर मात गरभ ना पवे जम्म, चुरासी डेरा देवे ढाईआ। सतिसंग सुणो सदा अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। झगड़ा मुक जाए हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। चार वरनां अठारां बरनां शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश दस्से इक्को रीत, दूई द्वैत ना कोई प्रगटाईआ। अन्तर आत्म साहिब सतिगुर कर के ठांडी सीत, अगनी तत्त दए बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला दस्स के साचा गीत, गहर गम्भीर पर्दा दए उठाईआ। घर सज्जण ठाकर मिले मीत, साहिब स्वामी नज़री आईआ। साचे सतिसंग दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी रीत, मनमुख गुरमुख दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा सतिसंग दए समझाईआ।

साचा सतिसंग वखाए अन्तर तन, निज नेत्र अक्ख करे रुशनाईआ। भाण्डा फोड़ के कूड़ भरम, दो जहान अन्तर आत्म दए समझाईआ। घर विच्च घर वखाए आपणा वतन, गृह मन्दर खुशी जणाईआ। गुरमुख लाल हीरा अमोलक बणे रतन, जो सतिसंग सुण के सतिगुर साचे सीस झुकाईआ। सच दवारा घाट मिले उह पतण, जिस दा खेवट खेटा सच मलाह इक्को नज़री आईआ। चिन्ता सोग़ रहे ना हरखन, ग़मी ग़म दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सतिसंग गुरमुखां नाल रखाईआ।

सतिसंग सर्ब दा मिलाप, एकता इक्को दए जणाईआ। पुरख अकाल वाहिगुरू खुदा गाड अल्ला इक्को जणावे धुर दा बाप, पिता पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म नाता जोड़ के साक, सगला संग दए बणाईआ। बन्द कवाड़ी खोलु के ताक, पर्दा उहला दए उठाईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, इक्को ब्रह्म दए प्रगटाईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़, झगड़ा कूड़ा दए गवाईआ। सतिसंग अन्दर सतिगुर नज़र आवे साख्यात, सनमुख बैठा सोभा पाईआ। जिस दी शब्द अगम्मी आवाज़, बिन रसना जिह्वा दए समझाईआ। झगड़ा चुक जाए रोज़ा निमाज़, मन्दर मस्जिद शिवदवाला मठ सतिगुर चरन दवारा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिसंग सदा आपणा रंग वखाईआ।

सतिसंग सर्ब दा सुख, सुख आत्म दए जणाईआ। जगत तृष्ना मेटे भुख, माया ममता मोह गवाईआ। दरस वखावे जो सतिगुर बैठा लुक, पर्दा उहला दए मिटाईआ। प्रेम प्यार अन्दर गुरसिख गुर गुर इक्क दूजे नूं जावण झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। गुरसंगत सतिसंगत अन्दर आवण जावण दा पैंडा जाए मुक, मुफ़त सतिगुर दया कमाईआ। जे कोई अगला मार्ग लए पुछ, उह वी सहजे दए दृढ़ाईआ। नाम निधान सुणा के इक्को तुक, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। आपणी गोदी लए चुक, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिसंग सद देवे माण वडयाईआ।

सतिसंग सर्ब तों चंगा, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए जणाईआ। गुरमुखां दे चरनां हेठां वैंहदी गंगा, जमना सुरसती गोदावरी लागे पाईंआ। जिन्नां दे अन्तर आत्म प्रेम नाम धुन सच्चा मरदंगा, दिवस रैण वजे वधाईआ। ओन्नां दा मालक ख़ालक प्रितपालक सूरा सर्बंगा,

शाह पातशाह शहनशाह सतिगुर इक्को नज़री आईआ। जिस दा नाम अगम्मी खण्डा, लोहार तरखाण ना कोई घड़ाईआ। जिस दी इक्को मंज़ल इक्को पौड़ा इक्को डण्डा, सचखण्ड दवारा सहजे दए जणाईआ। सतिसंग बन्दगी विच्चों बन्दना समझा के बणावे बन्दा, बन्दीखाना दए तुड़ाईआ। गुरमुखां विच्च मिल के मनमुख मूल रहे ना अन्धा, सतिगुर नेत्र ज्ञान दए दरसाईआ। घर विच्च घर जोत प्रकाश होवे उह चन्दा, जिस नूं सूरज चन्द दोवें सीस झुकाईआ। साचे प्रेम दा मिले उह अनन्दा, अनन्द इक्को इक्क एकंकार निरँकार विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिसंग सभ दा रूप एका दए बणाईआ ।

सतिसंग कहे मैनूं गुरमुख विरला करदा, प्रेम प्रीती नाल निभाईआ । जो बरदा बणे सतिगुर घर दा, गुर शब्द करे कमाईआ। उह निर्भय हो कदे ना डरदा, भउ सर्ब जाए तजाईआ। मेला होवे ओस निरँकार हरि दा, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। जो सच दवारे अन्दर वड़दा, मुक़ामे हक बह बह खुशी मनाईआ। जो सतिसंग अन्दर साहिब सतिगुर दा शब्द ढोला पढ़दा, सो पारब्रह्म सहजे आपणे विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा सतिसंग गुरमुखां नाल मिलाईआ।

सतिसंग कहे मैं मिलावां सतिगुर, जो सभ दा मालक नज़री आईआ । जिस दा आदि जुगादि लेखा लहणा देणा होवे धुर, धुर मस्तक खोज खुजाईआ। जो जुग जन्म दे विछड़यां लए जोड़, फड़ बांहों गोद बिठाईआ। जो सच प्रीती लग्गी निभावे तोड़, अन्तम आपे होए सहाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोर, सति जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के पंज चोर, पर्दा उहला दए उठाईआ । आपणे नाल सदा संग निरँकार निरवैर लए तोर, तुरत आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सचे सतिगुर दा सदा मंतर फुरना फोर, रमज़ इक्को इक्क वखाईआ। लेखा मुक जाए मोर तोर, महिंमा आपणी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा सतिसंग सति पुरुषां नाल समझाईआ।

सतिसंग कहे मैं सदा सतिवाद, सति सच दिआं दृढ़ाईआ। मेरा खेल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। मेरा रूप ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड करां रुशनाईआ। मैं सुणावां हुक्म संदेशा धुर दा नाद, गुर सतिगुर करे शनवाईआ। पर्दा उहला खोलूं राज़, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जिनूं गुरमुखां सतिसंग सारयां मिल के कीता एक साथ, इक्को सतिगुर दिआं वखाईआ। जो पावे सार अनाथां नाथ, दीनां दया कमाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर आपणी सुणावे शब्द अगम्मी बात, बातन ज़ाहर दए वडयाईआ। इक्को पट्टी इक्को पढ़ावे जमात, दूजी करे ना कोई पढ़ाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राओ रंक इक्को पौड़ी इक्को मंज़ल चढ़ाए घाट, घाटे सभ दे पूर कराईआ। सतिसंग कहे सभ दा मालक इक्को पुरख समराथ, जो समरथ स्वामी सभ दा मालक नज़री आईआ । सतिसंग कहे मैं गुरमुखां सदा मीत, मित्रां दा मित्र नज़री आईआ । मैं झगड़ा मुकावां ऊँच नीच, इक्को रूप दिआं समझाईआ। इक्को क़लमां इक्को नाम दस्सां हदीस, इक्को हज़रत दिआं वखाईआ। इक्को ढोला समझावां गीत, गहर गम्भीर पर्दा दिआं उठाईआ। गुरमुख नाल गुरमुख मिलण दी दस्सां तमीज़, तमअ तृष्ना दूर कराईआ । प्रेम प्यार अन्दर करावां इक्क दूजे दे अजीज,

मुहब्बत विच्च मुहब्बत नाता दिआं जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सतिसंग गुरमुखां नाल रचाईआ।
सतिसंग कहे मैनूं करदे सदा गुरमुख, जो सतिगुर अन्दरे अन्दर रहे धिआईआ। जिन्नां जन्म कर्म दा रहणा नहीं कोई दुःख, दीन दुनी दोवें लेखे पाईआ। ओन्नां दे अन्तर आत्म इक्क प्रेम प्यार दा सुख, सांतक सति नज़री आईआ। दिवस रैण मौली रहे रुत्त, पत्त टैहणी खुशी मनाईआ। सतिसंग कहे मैं सभ दे उत्ते खुश, जो खुशीआं नाल आपणा सतिगुर रहे ध्याईआ। (१६ अस्सू शहनशाही सम्मत १)

नारद कहे जन भगतो मैं तुहाढ़े अन्दर जावां लंघ, खुशीआं नाल मिलणा चाईं चाईंआ। जिथ्थे प्रभू प्यारयां दा साचा संग, साचा संगी इक्को वेख वखाईआ। प्रेम प्यार दी धार वगे अमृत गंग, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। मैनूं चंगा सोहणा दिसे ढंग, तारीका मेरे मन नूं भाईआ। तुसीं खुशीआं ढोले गाउणे छन्द, सोहँ सच पढ़ाईआ। आत्म धार होए पाबन्द, परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जिथ्थे रहे ना भुक्ख नंग, तृष्ना कूड़ ना कोई हलकाईआ। सेज सुहंझणी होए पलँघ, छप्पर छन्न मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ।

सतिसंग वेख्या अगम्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिथ्थे खुशी हुंदा बन्द बन्द, बन्दगी प्रभ दी विच्च समाईआ। नूरी जोत तक्क के चन्द, अन्ध अन्धेरा अन्ध मिटाईआ। साची मंज़ल हकीकी जल्वा वेखे लंघ, नूर नुराना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।
सतिसंग हुंदा काया मन्दर घर, साढे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जिथ्थे अमृत मिले डूंघे सर, सरोवर इक्को सोभा पाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर किरपा देवे कर, करनी दा करता कार कमाईआ। सच भंडारा देवे भर, खाली नज़र कोई ना आईआ। मेल मिलावा होवे इक्को हरि, जो हर हिरदे बैठा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म लए वर, कन्त कन्तूहल इक्क अखवाईआ। जिस नूं कहन्दे नरायण नर, नर निरँकार अगम्म अथाहीआ। निरभउ हो के चुकावे डर, भाउ आपणा इक्क समझाईआ। जिस दी सरन सरनाई जाईए पर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखाईआ।
सतिसंग होवे काया मन्दर, तन वजूद वज्जे वधाईआ। भाग लग्गे डूंघी कंदर, अन्ध अज्ञान रहण ना पाईआ। मनुआ दह दिशा ना उठ उठ धाए बन्दर, मनसा कूड़ ना कोई हलकाईआ। बजर कपाटी तुट्टे जंदर, त्रैगुण तत्त रहे ना राईआ। होवे प्रकाश बिना सूर्या चन्दर, जोती जाता डगमगाईआ। शरअ दा रहे कोई ना बंधन, मज़बी वंड ना कोई वंडाईआ। सच स्वामी लाए अञ्जण, अंगीकार इक्क अखवाईआ। जिस दे दवारिउँ सारे मंगण, खाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। उह साहिब सूरा सर्बगण, हरि करता इक्क अखवाईआ। जो भगतां सदा सतिसंगण, साथी इक्को नज़री आईआ। जो टुट्टी आवे गंढण, गंढणहार गोपाल स्वामी बेपरवाहीआ। साची दात आवे वंडण, नाम निधाना झोली पाईआ। जो लेखा जाणे

विच्च ब्रह्मण्डण, ब्रह्मांड ध्यान लगाईआ। जो वेखे कलिजुग घाट कन्ढुण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

सतिसंग कहे मैनूं करदा कोई, कोटां विच्चों नज़री आईआ। मेरी दो जहान दरोही, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। नव सत सभ दी पत गई खोही, पत पतवन्ता मिलण कोई ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अन्दर रही रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। सुरती उठे किसे ना सोई, शब्दी शब्द ना कोई शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा साहिब इक्क गुसाईंआ।

सतिसंग कहे मेरा रूप निराला जग, दीन दुनी दिआं जणाईआ। मेरा मार्ग वक्खरा अलग्ग, रस्ता इक्को इक्क दरसाईआ। मेरा मालक सूरा सर्बग्ग, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरा लहणा देणा जन भगतां जो प्रभ दी सरनी गए लग्ग, लग मातर डेरा ढाहीआ। मैं खुशीआं विच्च होवा गद गद, सिफ्ती ढोले गाईआ। मेरी चार दीवारीआं बाहर हद्द, जिस हदूद विच्च वसे धुर दा माहीआ। जिस दी लक्ख चुरासी यद, यदी यदप हुक्म वरताईआ। उस दा नाम संदेशा सुणां नद, जो अनहद नादी धुन करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

सतिसंग कहे मेरी विष्न ब्रह्मा शिव चलाई रीत, निरगुण निरगुण ढोले गाईआ। सोहँ शब्द गाया गीत, तूं मेरा मैं तेरा हक़ पढ़ाईआ। त्रैगुण नालों आपणी वक्खरी दस्स प्रीत, प्रीतम हो के दिआं जणाईआ। सदा सुहेला हो के वसां चीत, ठगोरी तन रहे ना राईआ। मेरा ब्रह्म ब्रह्मादी सति सतिवादी शब्द अनादी एका गीत, गोबिन्द ढोला सहज सुभाईआ। मैं परखणहारा निरगुण धार रीत, रीतीवान इक्क अखवाईआ। मेरा लेखा नाल हस्त कीट, कीट कीटां डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक्क सुहाईआ।

सतिसंग कहे मैनूं विष्न शिव गाया, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। त्रैगुण माया गुण गाया, रजो तमो सतो वंड वंडाईआ। पंजां तत्तां पन्ध मुकाया, अप तेज़ वाए पृथ्मी आकाश ना कोई चुकाईआ। नूर नुराना दीप इक्क जगाया, जोती जाता इक्क रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला गाया, बिन रसना सिफ्त सलाहीआ। तिन्नां मिलके मेरा साचा संग बणाया, तिन्ना लोकां वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिसंग कहे विष्न ब्रह्मा शिव होवो इक्ठे, आदि दी धार दिआं जणाईआ। पहलों प्रभ दी सरन सरनाई ढठ्ठे, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। फिर थिर घर फिरन नठ्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। नाले इक्क दूजे नूं करन ठठ्ठे, मसखरी रहे उडाईआ। आउ सतिगुर शब्द दे बणीए पठ्ठे, जो सिख्या दए समझाईआ। जिस उलटी गेड़नी लठ्ठे, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। उस वेले तिन्नां मिलके तूं मेरा मैं तेरा गाए टप्पे, सोहँ कीती सच पढ़ाईआ। फिर अक्खरां विच्च माण दिता इक्को पप्पे, पूरन ब्रह्म दिता समझाईआ। जिस दे हुक्म विच्च त्रैगुण अगनी तपे, त्रैगुण अतीता खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर पर्दा आप उठाईआ।

सतिसंग कहे मेरी रीत बहु पुराणी, पुराण अठारां कहण कुछ ना पाईआ। मेरी ब्रह्मा विष्न

शिव जाणे कहाणी, चारे वेद पड़दा ना कोई उठाईआ। मेरा गृह पद निरबाणी, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा शहनशाह नूर नुरानी, पातशाह इक्क अखवाईआ । जिस नूं जगत जहान गाउँणा ज़बानी, रसना जिह्वा ढोले गाईआ । खलक वेखे खालक असमानी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। मेरा लहणा देणा नहीं नाल समुंद सागराँ पाणी, जलां थलां ना वंड वंडाईआ। मेरी मंज़ल नहीं रुहानी, रूह बुत्त ना कोई शनवाईआ । मेरी खेल नहीं कोई चार खाणी, अंडज जेरज़ उत्भुज सेतज वंड ना कोई वंडाईआ। मेरी अवतार पैगम्बर गुरूआं तों पैहलां दी कहाणी, बिना कथा तों कथा दिआं दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा राह इक्क दरसाईआ।

सतिसंग कहे मैनूं विष्न ब्रह्मा शिव कीता, करनी दा करता पुरख नाल मिलाईआ। सतिगुर शब्द साडा बणया मीता, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। जिस ने मिल के चलणा दस्सी रीता, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। साडी तिन्नां दी इक्को कीती नीता, नीतीवान होया सहाईआ। बिन रसना नाम निधान अगम्मा पीता, पत्तित पावन दिआं पिआईआ। साडा अन्तश्करन होया ठांडा सीता, जुग चौकड़ी ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

विष्न ब्रह्मा शिव कहण साडा सतिसंग होया पहला नाल पुरख अकाल, जिस कला दिती वरताईआ। सो हो के आप दयाल, सो पुरख निरञ्जण वेख वखाईआ। हरि पुरख निरञ्जण चला के चाल, चाल निराली इक्क दरसाईआ। एकँकार करी संभाल, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। श्री भगवान वस्सया नाल, अबिनाशी करता संग निभाईआ। पारब्रह्म कीती भाल, खोज खोज्या चाईं चाईंआ। सतिगुर शब्द हो के नाल, मेल मिलाया धुरदरगाहीआ। असां तिन्नां कीता सवाल, निव निव सीस झुकाईआ। की खेल तेरा कमाल, कमलापाती दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरताईआ।

सतिगुर शब्द किहा सुण विष्न ब्रह्मा शिव धुर दा हुक्म रक्खणा याद, याददाशत भुल्ल कदे ना जाईआ। तुहाढ्ढी धार सृष्टी करनी अबाद, लक्ख चुरासी वंड वंडाईआ। त्रैगुण माया पंज तत्त दी देंदी दात, आत्म परमात्म देणी वरताईआ। खेल खेलणा बण के मोहण माधव माध, मधुर धुन देणी शनवाईआ। हुक्म संदेश देणा बोध अगाध, बिन अक्खरां अक्खर सुणाईआ। तुसां निरगुण धार निरगुण लैणा अराध, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ। नेड़ रहे ना विवाद, विख रूप ना कोई प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप जणाईआ।

सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव बणे मेरे सतिसंगी, संगीउ दिआं जणाईआ। सृष्टी खेल होणी बहुरंगी, रंगत समझ कोई ना पाईआ। इक्क ख़बर सुणावां चंगी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। साचे नाम दी लावां पाबन्दी, आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी नाल करावां संधी, साचा हुक्म सुणाईआ। शरअ विच्च शरअ जाणी वंडी, हिस्से गंढ वखाईआ। जुग चौकड़ी जाणी लंघी, आपणा पन्ध मुकाईआ । कलिजुग कूड़ कुड़िआर दी आउणी कन्ढ्ढी, घाटां फोल फुलाईआ। किते पवण नहीं वगणी ठंढी, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दी चमके चंडी, चंडालका रूप वटाईआ। सृष्टी दृष्टी होणी परवण्डी, बहुरूपां

विच्च कुरलाईआ। दरोही फिरनी विच्च वरभंडी, ब्रह्मण्ड देण सुणाईआ। सच मार्ग दी किसे हत्थ नहीं आउँणी डण्डी, डण्डा सारे जाण भुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी होणी तंगी, सत्त दीप रोवण मारन धाहीआ। प्रभू दी दात मिले किसे ना मंगी, खाली झोली ना कोई भराईआ। अमृत रस रहणी नहीं धार गंगी, गंगा गोदावरी जमना सुरसती सार कोई ना पाईआ। विद्या रहणी नहीं किसे कोल पंडी, पंडत पन्ध ना कोई मुकाईआ। प्रीती टुट्टी जाए ना गंढी, सुरत शब्द ना कोई जणाईआ। भार चुक्के कोई ना कंधी, बोझल दिसे कूड़ लुकाईआ। माण रहे ना प्रकृती पंझी, पंचम तत्त ना कोई चतुराईआ। मानव जाति होई रंजी, रंजश विच्च खलक खुदाईआ। उस वेले धरनी रोवे नेत्र हंझी, हन्झआं हार बणाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआर पहर के बाणा जंगी, चारों कुण्ट लए अंगढ़ाईआ। सतिगुर शब्द किहा विष्न ब्रह्मा शिव जेहड़ा उस वेले भगतां नाल भगत बणेगा संगी, सगला साथी आत्म परमात्म लए परनाईआ। उस दा लेखा वेखणहारा जिस दी हाथ ना आवे वंझी, वंझ मुहाणा जगत ना कोई जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा वक्त आप सुहाईआ।

सतिसंग कहे मेरी प्रभ चरन कँवल अरदास, बेनन्ती इक्क जणाईआ । प्रभू रक्खणा आपणे पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। बेशक तेरा लेखा पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतरां सोभा पाईआ। मण्डल मंडप तेरी रास, रव सस सूर्या चन्न तेरी रुशनाईआ। जन भगत सुहेले बणाओ आपणे दास, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। लेखे लाओ पवण स्वास, साह साह तेरे चरन टिकाईआ। शहादत देवे शंकर उत्ते कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्मलोक विच्च करे शनवाईआ। विष्नूं विश्व दी धार आवे पास, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सतिसंग विच्च जन भगत सुहेला होए ना कोई उदास, चिन्ता ग़म ना कोई रखवाईआ। काया मन्दर अन्दर करना प्रकाश, जोती जाते डगमगाईआ। सभ दी पूरी करनी आस, तृष्ना तृखा जगत कूड़ मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे उत्ते विश्वाश, विश्व दा मालक विशा आपणा देणा समझाईआ। (१६ जेठ शहनशाही सम्मत ११)

सो पुरख निरञ्जण धार सति, सति सति विच्चों प्रगटाईआ। हरि पुरख निरञ्जण धार सति, बिन रूप रंग रेख सोभा पाईआ। एकँकार धार सति, जिस दी बणत जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। आदि निरञ्जण धार सति, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते धार सति, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। श्री भगवान धार सति, सति सति सति आप हो जाईआ। पारब्रह्म धार सति, परम पुरख वेख वखाईआ। सचखण्ड धार सति, बिन छप्पर छन्न मिल वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सो पुरख निरञ्जण साचा संग, हरि संगी इक्क अखवाईआ। हरि पुरख निरञ्जण धुर दा रंग, रंगत जगत ना कोई वडयाईआ। एकँकारा सच दवारा वेखे आपणा आपे लँघ, दूजी मंज़ल ना कोई जणाईआ। आदि निरञ्जण सेज सुहाए पलँघ, बिन पावा चूल सोभा पाईआ। श्री भगवान नौजवान वजाए मरदंग, बिन ताल तलवाड़ा आपणा हुक्म दृढ़ाईआ। अबिनाशी

करता खेल करे अगम्म, अलख अगोचर आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। पारब्रह्म हुक्म सुणाए बिन रसना जिह्वा दम, स्वास स्वासा ना कोई सचखण्ड दुहाईआ। निरगुण धार जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड ना कोई वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिसंग कहे मैं बिना फिरना स्वास दमया, दामनगीर इक्क अखवाईआ। मैनूं जनणी किसे नहीं जम्मया, तन वजूद ना वेस वटाईआ। मैनूं माण दिता नहीं किसे ब्रह्मया, सृष्टी संग ना कोई रखवाईआ। मेरा लेखा नहीं काया माटी चम्मया, चम्म दृष्टी नज़र कोई ना आईआ। मैनूं हरख सोग नहीं ग़मिआ, चिन्ता चिखा ना कोई तपाईआ। मेरा हद्द नहीं कोई बंनया, जगत वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा अक्खर मुकता नहीं कोई कंनया, कायनात ना वेख वखाईआ। मेरा समझे कोई ना समयां, जुग चौकड़ी समापत हुंदी वेखी लोकाईआ। मेरा लेखा निरगुण सरगुण धार चौंदा सौ तीह अंक दा पन्नयां, अक्खर अक्खरां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप उठाईआ।

सतिसंग कहे मेरा मालक इक्क स्वामी, हरि करता धुरदरगाहीआ । जो आदि जुगादी अन्तरजामी, अन्तश्करन वेखे खलक खुदाईआ। जिस दी चार जुग दे शास्त्र अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर बदलाईआ। जिस दा लेखा दो जहानी, ज़िमीं असमानां हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज बैठी वेस वटाईआ। जिस दी मंज़ल हक नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। जो वसे सचखण्ड मकानी, दरगाह साची सोभा पाईआ । जिस ने लोकमात मेरी बणाई निशानी, निशाना दीन दुनी समझाईआ । मेरा लेखा लिख सके ना कोई कानी, कलम शाही ना कोई वडयाईआ । मेरे उत्ते मेहरवान कीती मेहरवानी, महबूब दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप सुणाईआ।

सतिसंग कहे मेरा खेल नयारा, निराकार दिआं दृढ़ाईआ। मेरा लहणा देणा नाल पुरख नारा, स्त्री मर्द वंड ना कोई वंडाईआ। मैं खेल खेलया नाल तेई अवतारां, अवतरी हो के आपणा संग बणाईआ। धर्म धार दीआं तक्कीआं बहारां, खुशी खुशीआं विच्चों रखवाईआ। मेरे सिफ्त दीआं बणीआं वारां, वारस हो के वेखे धुर दा माहीआ। मैं लहणा देणा दस्सां सम्मत शहनशाही गिआरां, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। जिस स्वामी अन्तर आत्म हिलाउँणीआं तारां, सुत्तयां भगतां आप जगाईआ। बिना हुलारयां दए हुलारा, ज़िमी असमानां बाहर हिलाईआ। साचा संगी होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप रखवाईआ।

सतिसंग कहे जिस वेले मैनूं प्रेम नाल कीता, करनी दा करता दए वडयाईआ। उह हरिजन होए पत्तित पुनीता, पत्तित पावन वेख वखाईआ। मेरा इशारा वशिष्ट नाल कीता राम नाल सीता, सीता राम गिआ दृढ़ाईआ। भेव खुल्हाया काहन अरजन विच्च गीता, अठारां ध्याए बोलण चाईं चाईंआ। पैगम्बरां किहा मेरा खेल अव्वला चरचां बाहर मसीतां, मसला इक्को इक्क सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक्क अखवाईआ।

सतिसंग कहे मेरा लेखा नाल रसूला, रसम पिछली दिआं दृढ़ाईआ । मेरा हुक्म इक्क माकूला,

मुकम्मल दिआं दृढ़ाईआ। जिस नूं अवतारां किहा चरन धूला, धूढ़ी खाक रमाईआ। उस नूं पैगम्बरां कदम बोसी कह कबूला, किबले अज़ अज़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क गुसाईंआ।

सतिसंग कहे मेरा मालक नूर अलाह, आलमीन इक्क अखवाईआ। जेहड़ा बिन वंझ मुहाणिउँ होए मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ । जिस पैगम्बरां दिती सलाह, मूसा ईसा मुहम्मद कलमयां नाल पढ़ाईआ। अबादखाने मेरे बणने गवाह, शहादत जगत वाला भुगताईआ। जमात विच्च बह के खुदा अग्गे करन दवा, दोए दस्त दस्त उठाईआ। मैं सभ दा रहनुमा, रहबर भेव दिआं चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक होए सहाईआ।

सतिसंग कहे मैनूं मूसा दिती तज़ीह, नूरे चशम चशम रुशनाईआ । जिस दा मालक इक्क तलवज़ी, मोज़ोले जम्म नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म दाइरा अगम्म वसीह, वसीहत विच्च हत्थ किसे ना आईआ । उस ने दिती सच तज़ीह, तरीके नाल सुणाईआ। जिस ने मालक लभ्भणा रब्बी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह मविस्ती मदीउल दवा दस्ते दवा गोशे ज़मा जमूवल ज़मीअल ज़मने ज़रे ज़रे तके अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साथ आप बणाईआ।

सतिसंग कहे मैनूं ईसा कीता परवान, मनज़ूरी हज़ूरी विच्चों आईआ । जिस इक्क उत्ते इक्क लाया अमान, इक्क इक्क नाल मिलाईआ। कलमा गाँदे बिना ज़बान, सोहला सोहलिआं विच्चों समझाईआ। जिस मिलणा रहीम रैहमान, नूर नुराना वेखणा चाईं चाईंआ। उह मेरा प्यार करे परवान, संगी बणके साचा संग बणाईआ। जिस विच्च दुःख मिले महान, सुख नज़र कोई ना आईआ। यूनाह धरती उत्ते लाया निशान, उंगलां दस दस सुहाईआ। की खेल करे निगाहबान, बिन नैणां नैण उठाईआ। ईसा तक के उत्ते असमान, गाड गुड कह के सीस निवाईआ। मेरा बाप वड्डा पहलवान, सूरबीर अखवाईआ। जिस ने मेरी बीसवीं सदी करनी कल्याण, बीस बीसा नूर अलाहीआ। सभ दा रक्खे आप ध्यान, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। इक्ठे हो के उस दा गाईए गाण, तूं ही पिता तूं ही माईआ। सतिसंग कहे हज़रत ईसा बणाया विधान, शरअ शरीअत संग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिसंग कहे मेरा लेखा नाल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा मालक खालक दस्तगीर, दामनगीर नूर अलाहीआ । जिस शरअ दे पाए जंज़ीर, कुण्डी सके ना कोई तुड़ाईआ। उस संदेशा दिता अखीर, अक्खर अलफ़ ये नाल मिलाईआ। नाम कलमे दी दस्सी तदबीर, तारीका दिता समझाईआ। मेरा मालक पीरां दा पीर, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जो लहणा देणा जाणे शाह हकीर, फकीर दरवेशां मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ। सतिसंग कहे मेरी धार नयारी, निराकार दिती वडयाईआ। मेरा लहणा देणा नाल मुहम्मद चार यारी, अबू बक्कर शहादत दए भुगताईआ। ऐली कूक कूक गिआ पुकारी, तूं ही तूं ही राग सुणाईआ। मुहम्मद कीता कौल इकरारी, वाअदा वाअदिआं विच्च जणाईआ। चार यार करयो ना कोई तकरारी, झगड़ा दुनी ना कोई रखाईआ। सजदा करना परवरदिगारी,

दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं शहनशाह इक्क सिकदारी, पातशाह नूर अलाहीआ। तेरी मिल के करीए दारी, दीन दुनी दे मालक देणी वडयाईआ। सतिसंग कहे मैनूं याद उह दिहारी, दिवस रैण वेख वखाईआ। उनी जेठ अगम्मी वारी, वारता पिछली दिआं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर आप खुल्ह़ाईआ। सतिसंग कहे मैनूं सभ ने कीता मनज़ूर, मुतला सभ नूं दिआं कराईआ। मेरा लहणा देणा सूफीआं भगतां नाल ज़रूर, ज़रूरत सभ दी वेख वखाईआ। साचा सतिसंगी नूरे ज़वा बिन रसना किहा मनसूर, खुद खुदा इक्क अखवाईआ। जिस दा पन्ध नहीं कोई दूर, दूर नेड़ा वंड ना कोई वंडाईआ। जिस ने मूसा मुसलसल इशारा कीता तूर, तुरीआ तों बाहर दिआं जणाईआ। जिस ईसा सलीव उत्ते कीता मनज़ूर, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। सतिसंग कहे उह मालक स्वामी सभ दी ज़रूरत पूरी करे ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर वेख वखाईआ। कलिजुग अन्तम क्रिया मेटे कूड़, कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतां बख्श के चरन धूड़, धूढ़ी टिक्के खाक रमाईआ। जिस दा आदि जुगादि सच्चा दस्तूर, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

सतिसंग कहे जन भगतो मेरी साची रंगत, रंगणहार इक्क अखवाईआ। जिस दे दर दे सारे बणो मंगत, भिख्खया नाम वाली वरताईआ। चार वरन बणाए इक्को संगत, ऊँच नीच नज़र कोई ना आईआ। धर्म दी धार बणे पंडत, बोध अगाधा दए समझाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। सच दवार बणाए आपणी संगत, सति सति विच्च मिलाईआ। अन्तम लेखा मुक्के विच्च जीव जंत, लक्ख चुरासी रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मेला मेले धुर दा कन्त, कन्तूहल होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल आदि अन्त, जुगा जुगन्त धुर दा हुक्म वरताईआ। (१६ जेठ श सं ११ लाट साहिब दे गृह)

साचा संगी पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता इक्क अखवाईआ। जो धर्म दी धार पावे रहिरासी, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने गुरू गुरदेव बणाए दास दासी, सेवक सेवा विच्च रखाईआ। भेव खुल्ला के पृथ्मी आकाशी, पर्दा दो जहान चुकाईआ। सच दवार दा बण के वासी, संदेशा दिता चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा दर इक्क वखाईआ।

साचा सतिसंगी सतिगुर पुरख देवी देव, देव आत्मा दए वडयाईआ। जिस दा खेल अलख अभेव, अगोचर कहण किछ ना पाईआ। जो जन भगतां देवे अन्तर आत्म साचा मेव, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। नाम जपावे रसना जिहव, पवण स्वासां नाल वडयाईआ। धाम वखाए इक्क निहकेव, निहचल आपणा दर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पड़दा आप उठाईआ।

सतिसंग वेख्या गोबिन्द धार, दस दस आपणा भेव चुकाईआ। नानक कीता नाल प्यार, प्रेम प्रीती विच्च वडयाईआ। नाम सति बणा के यार, मित्र प्यारा मेल मिलाईआ। ढोला गाया अगम्म अपार, सोहँ साचा सहज सुखदाईआ। नाल सुरंगी वजाई सितार, तूं ही तूं ही राग

जणाईआ। सतिसंग वखाया विच्च संसार, जीवां जंतां साधां सन्तां कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ। सतिसंग कहे मेरा गुरूआं दिता संदेश, दीन दुनी जणाईआ। मेरा सभ तों वक्खरा उपदेश, उपनिशधां वेखण नैण उठाईआ। चुकन्ना होया गणपत गणेश, विष्न ब्रह्मा शिव लए अंगढ़ाईआ। मेरा लहणा देणा नाल दस दस्मेश, गोबिन्द ढोला गाया धुर दा माहीआ। चार वरनां इक्क जणा के भेस, मार्ग इक्को इक्क लगाईआ। सतिसंग दस्सया मुच्छ दाड़ी रखणा केस, केसगढ़ दिती वडयाईआ। बुद्धि रहे ना कोई मलेश, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। पुरख अकाल जणाया नरेश, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस सतिसंग विच्च सारे होए पेश, पेशीनगोईआं आपणे हत्थ रखवाईआ। जिस दा विशा इक्क विषेश, विश्व दा आपणा भेव चुकाईआ। कलिजुग होणा अन्त कलेश, कलधारी होए लुकाईआ। फेर भाग लग्गणा सम्बल देस, साढे तिन्न हत्थ वज्जे वधाईआ। जोती जाता होए परवेश, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दा पड़दा आप चुकाईआ। निरगुण धार लिखे लेख, लेख लेखणी देवे माण वडयाईआ। दीन दुनी दी बदले रेख, रिखीआं मुनीआं पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवार इक्क सुहाईआ।

सतिसंग कहे मैनूं गोबिन्द कीता ललकार, बिना शरअ तों शरअ जणाईआ। खण्डे खड़ग दी दस्स चमकार, जगत अन्धेरयां पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल अग्गे किहा पुकार, कूक कूक सुणाईआ। तूं सतिसंगी मेरा यार, यारड़े तेरी सेज लवां हंढाईआ। मेरा लेखा वेख विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। मैं संदेशा देवां गुरसिखो आपणी वार, गुरमुखां दिआं जणाईआ। सतिसंगीउ रहणा सदा त्यार, सति सति नाल वडयाईआ। अमृत दे के ठंढा ठार, रस अंमिउँ दिता चुआईआ। पंचम मीता बण कीता सच प्यार, प्रीत प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दवार इक्क समझाईआ।

सतिसंग कहे मेरा गोबिन्द कीता इक्ठ, सोहणी दिती वडयाईआ। धीरज धर्म दा बख्शया हठ, सन्तोख गुरमुखां झोली पाईआ। प्रेम प्रीती खोल्लया हट्ट, वणजारा बणया धुर दा माहीआ। जिस इक्ठे कीते छींबे झीवर नाई जट्ट, गरीबां अंग लगाईआ। दुखीआं दर्द मेट के फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। जगत शरअ दी डोरी कट्ट, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। दूई दवैती मेट के वट्ट, वटणा मलया चाईं चाईंआ। सतिसंग कहे गुरसिखां साचा लाहा लिआ खट्ट, खटका जन्म रिहा ना राईआ। जिन्नां इक्को नाम लिआ रट, वाहवा वाहिगुरू तेरी बेपरवाहीआ। सतिसंग कहे मैं शुकराने विच्च जोड़े हत्थ, खुशीआं विच्च खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिंमा कथ कथ जणाईआ। (१६ जेठ शहनशाही सम्मत ११)

साचा सतिसंग सतिगुर चरन, चार जुग दे सतिसंगी देण गवाहीआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं ज़ात पात वरन बरन, मानस मानव वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को गीत आत्म परमात्म ढोला पढ़न, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ। सच प्यार दी मंज़ल चढ़न, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। जोती जाते लड़ फड़न, नाता सके ना कोई तुड़ाईआ। सच दवार धुर दे वड़न, अग्गे हो

ना कोई अटकाईआ। सतिगुर स्वामी तरनी तरन, तारनहार इक्क अखवाईआ। जो आदि जुगादी करनी करन, करता पुरख अगम्म अथाहीआ। जिस दी सभ ने मंगी शरन, टेक इक्को इक्क जणाईआ। सो भगत सुहेला सुहाए आपणा दरन, दर दवारा इक्क वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक धुरदरगाहीआ।

सतिसंग कहे मैं सोभा लोकमात, सतिगुर शब्द दए वडयाईआ। मेरी झोली पावे अगम्मी दात, वस्त अमुल आप वरताईआ। मेरा वक्त नहीं कोई दिवस रात, अठ्ठे पहर खुशीआं दे ढोले गाईआ। मेरी वक्खरी नहीं कोई जमात, अक्खरां वाली ना कोई पढ़ाईआ। मेरी सभ तों वक्खरी ज़ात, अजाति रूप ना कोई दरसाईआ। मेरा झगड़ा नहीं कोई नाल कागज़ात, दवैत विच्च कदे ना आईआ। सदा सदा आबाद, जुग जुग प्रभ दी ओट तकाईआ। मेरा मालक मोहण माधव माध, जो देवणहार सरनाईआ। जिस मेरी रचना रची आदि, अन्त वेखे धुरदरगाहीआ। मेरा हुक्म नहीं कोई तत्तां ... ... , तन वजूद ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिसंग कहे मैं सतिगुर शब्द दी धार संयोगी, मेला सच नाल मिलाईआ। मैं अमृत रस प्यालदा तेगी, दूसर रस ना कोई जणाईआ। मैं कूड़ विकार दा वियोगी, ममता मोह ना कोई रखवाईआ। मैं बिन अक्खर धार दा बोधी, बुद्धि तों परे पढ़ाईआ। मेरी आशा तृष्ना कदे बणी ना लोभी, लालच तृष्ना विच्च कदे ना आईआ। मैं सेवक दुरमत मैल दा धोबी, पापां करां सफाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा होया सहाईआ।

सतिसंग कहे मैं इक्को रक्खया इष्ट, देव आत्मा दीन दुनी जणाईआ। मेरा प्यार सबाई सृष्ट, श्रेष्ट दिआं दृढ़ाईआ। मेरा रूप नहीं टांक जिसत, हिसिआं विच्च कदे ना आईआ। मेरा लेखा नहीं स्वर्ग बहश्त, दोज़ख़ गंढ ना कोई बंधाईआ। मेरे अन्तर इक्को सच प्यार दी इशक, आशक मशूक दोवां दिआं दृढ़ाईआ। मेरी मंज़ल हकीकी कदे ना जाणा तिलक, तिलक ललाटी सभ नूं दिआं वखाईआ। मेरी बिरहों विछोड़े विच्च निकले किलक, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा साहिब इक्क गुसाईंआ।

सतिसंग कहे जन भगतो मेरी आदि जुगादि सिख्या, शरअ विच्च बदल कदे ना जाईआ। मेरा लेखा बिन कलम शाही तों लिखया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैनूं आदि पुरख पाई भिख्खया, भिच्छया मेरी झोली पाईआ। निरगुण हो के कीता हित्तया, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मेरी... ... ... बण के मित्तयाा, मित्र प्यारा दए वडयाईआ। मेरा ठांढा कीता चित्तयाा, ठगोरी चित नज़र कोई ना आईआ। मेरा आपणा आप मिट्टया, हँकार जगत ना कोई रखवाईआ। मेरा लहणा देणा होया चिट्टया, कालख रहण कोई ना पाईआ। मेरा संग नहीं कोई पत्थर इट्टया, पाहिना वंड ना कोई वंडाईआ। मैं धरनी उत्ते जन भगतां अन्दर टिक्कया, गुरमुखां अन्दर डेरा लाईआ। सच प्यार दी कीमत विक्कया, दूसर कीमत समझ किसे ना आईआ। मालक इक्को पित्तया, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो सच सुहञ्जणी

सेजा अन्दर लिट्टया, सिँघासण आसण सोभा पाईआ। जो मेरे विच्च नाम फल रस देवे मिट्ठया, अनडिठड़ा आप चखाईआ। जिस जुग जुग आपणा खेल आप नजिट्ठया, दूसर हत्थ ना कदे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा जाणे नित्त नवित्तया, निरगुण हो के निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। (२० जेठ श सं ११)

सति पुरख : सति पुरख प्रभ आप निरञ्जण, प्रगट अगम्म अपारा जीउ। सर्ब समरथ कलिजुग लए अवतारा जीउ। (२२ जेठ २००७ बि)
वाकअई एह सति पुरख सभ दा बाप, जो भंडारे ख़ाली रिहा भराईआ। (१५ माघ २०२१ बि) (पारब्रह्म)

सति पदार्थ : सच पदार्थ आपणा नाम वंडी, दाता दानी हो के आप वरताईआ। (२५ विसाख श सं ११) सच सति सुच्च ओस दी सेवा, दर दरबार इक्को सोभा पाईआ। जिस दा सच पदार्थ धुर दा मेवा, साध सन्त सदा सदा सद रहे खाईआ। (१६ जेठ २०२१ बि)

महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच पदार्थ नाम दिती अनोखी फली, फल गुरमुखां रही लगाईआ। (४ अस्सू २०२१ बि)
सच पदार्थ दे के दात, जीव जंत दे समझाईआ। (७ अस्सू २०२१ बि) (आत्म ज्ञान)

सतिवादी : सतिजुग विच्च सतिवादी आए। ईशर बिना ना कोई गुण गाए। (१६ मध्घर २००६ बि)
सतिवादी जीव ना कबहूं डरते, रहे राम सिउँ लिव लाए। (६ सावण २००८ बि)

सति सतिवादी शाहो भूप, शहनशाह अखवाइंदा। दए संदेसा चारे कूट, दह दिशा वेख वखाइंदा। (२२ जेठ २०२१ बि)
सति सतिवादी रक्खणा सदा चीत, विसर कदे ना जाईआ। (२४ जेठ २०२१ बि)

सतिवन्त : साचा प्रभ सदा सतिवन्त। (१ माघ २००८ बि)
सृष्ट सबाई कूड़ो कूड़, एका जोत सति सतिवन्ता, पूरन भगवन्ता हरि भगवान है। (७ अस्सू २०११ बि)
गुरमुख सति सतिवन्ती वेखे नार, सतिगुर बण बण सज्जण माहीआ। (२५ चेत २०१६ बि) (यती)

सती : आत्म यती गुरसिख रखाया। नार सबाई होए सती, एका निहुं साचे पीआ संग लगाया। (१ माघ २००६ बि)
साड़ सती अद्धरम दी धार है, धर्म कर्म ना कोई जणाए। (२३ मध्घर २०१३ बि) (सति)

सन्तोख धीरज विच्च नज़र ना आवे कोई यती, सति विच्च सती ना कोई समाईआ। (२१ चेत श सं २)

सपत रिखी : रंगे रंग काया चोली, शब्द रतन जुड़ाउ। नाम बणाए साची डोली, प्रेम लगाए बाहू। आत्म पड़दे रिहा खोल्ही, आत्म रामा वेख वखाणे थाउँ थाउँ। सच दवारे एका गोली, ना कोई रोके कथाहू। सपत रिखी आ मारे बोली, भगत धरूआ वेख्या थाउँ। पूरे तोल रिहा तोली, जोती जोत सरूप हरि, दूसर को नाही।
सपत सुरिख रिखी रखवारे। साचे मण्डल लेखा लिख, वेखे खेल हरि अपारे। वशिष्ट केसप अतरी साचा थापन थापे। गौतम रक्खे साची छतरी, शब्द अजपा जापे। भारदवाज मित्र मतलवी, करे खेल काली राते। जगभदर आपे नाचे। जोत जुगत जुगत जोत आत्म रक्खे दाते । जोती जोत सरूप हरि, गौतम गवरा वेखे अवरा कर्म कांड कल साचे। (१६ हाढ़ २०१२ बि)

सजदा : भेव अभेदा खोल्हां राज़, पर्दा आप उठाईआ। साचा सजदा वज़ूह निमाज़, परवरदिगार ध्यान लगाईआ। साचा मन्दर मस्जिद शिवदवाला माठ, काया काअबा सोभा पाईआ। सच महबूब श्री भगवान करो सच अदाब, सरन चरन सीस निवाईआ। नाड़ बहत्तर तन सतार वजे रबाब, अनरागी राग अलाईआ। (२१ फग्गण २०२१ बि)

बिना भगती बिना पूजा बिना पाठ बिना सिमरन तुहानूं बणौण आया उह साध, जिस दी साधना ना किसे समझाईआ। तुहानूं देवण आया उह ख़ताब, जिस नूं मंगदे मंगदे कोटन कोट गए आपणा आप मिटाईआ। तुहाढ्ढा मन्दर सुहावण आया उच्च मिनार महिराब, महबूब हो के फेरा पाईआ। तुहाढ्ढे प्रेम नूं करन आया आदाब, सयदिआं विच्चों सजदा इक्क समझाईआ। (१८ जेठ श सं १)

धुर दा सजदा करे ना कोई निमस्कारा, डण्डावत विच्च बन्दना विच्च बन्दगी ना कोई कमाईआ। मानस जन्म मानव ना किसे सुधारा, मनुखां अन्दर मानुखता नज़र कोई ना आईआ। (४ पोह श सं २)
प्रभ चरन कँवल साची करे कोई ना बंदन, डण्डोत विच्च आपणा आप भेट ना कोई चढ़ाइंदा। जगत वासना सारे मंगण, निरइछत नज़र कोई ना आइंदा। (२१ हाढ़ २०२१ बि)

शरअ : शरअ छुरी मेटे जगत शैतान, धर्म दी धार इक्क समझाईआ । (१ सावण श सं ८)

शरअ दा रहण देवे ना कोई गुलामन, ज़ंजीर जगत दए तुड़ाईआ। (३० सावण श सं ८)
शरअ विच्चों सारे कर आज़ाद, प्रहलाद तेरे वांग भगत दए बणाईआ। (१० भादरों श सं ८)

✪ ✪ ✪ ✪ ✪

सति धर्म सच विहार, सति सतिवादी बूझ बुझाइंदा।
सति कर्म सति आधार, सति सतिवादी राह चलाइंदा।
सति पुरख सति करतार, हरि करता खेल वखाइंदा।
सच लेखा श्री भगवान, जुग चौकड़ी समझ कोई ना पाइंदा।
साची धार साचा गोबिन्द, गुर सतिगुर आप जणाईआ।
साचा अमृत गहर गम्भीर सागर सिंध, डूंघी धार आप वखाईआ ।
साचा दाता गुणी गहिंद, वड वड्डा वड वडयाईआ।
सच्चा सतिगुर सच्चा मीत, मित्र प्यारा सच अखवाइंदा।
सच्चा नाम सच्चा गीत, सतिगुर सच्चा आप सुणाइंदा।
सच्चा मार्ग साची रीत, साचा राह आप वखाइंदा।
साचा खेल हस्त कीट, साचा इष्ट ऊँच नीच आप बुझाइंदा।
सच्चा धाम इक्क अनडीठ, सच्ची काया मन्दर अन्दर सोभा पाइंदा।
सच मेल सिरजणहार, निरगुण सरगुण बंधन पाईआ।
साचा रंग श्री भगवन्त, घर साचे आप चढ़ाइंदा।
साचा नाम सतिगुर मंत, सति सतिवादी सच समझाइंदा।
साचा मीता नर हरि कन्त, सच दुआरे सोभा पाइंदा।
साचा जोड़ा हरि हरिसंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक्क रखाइंदा।

साचा नाम शब्द ज्ञान।
साचा कर्म धर्म निशान।
साचा जन्म कर्म परवान।
साचा खेल श्री भगवाना।
साचा मेल पुरख सुलताना।
साचा हुक्म धुर फ़रमान।
साचा तुख्म भगत भगवान।
साचा सुख गुर चरन ध्यान।
साचा मुख गोबिन्द गाए गान।
साची कुक्ख गुरमुख जम्मे नौजवान।
साचा मार्ग पुरख अकाल।
साचा सालस दीन दयाल।
साचा ख़ालस गुर गोपाल।
साचा बालक गुरसिख लाल।
साचा ख़ालक वड मेहरवान ।
साचा नाउँ आदि जुगादि।
साचा थाउँ ब्रह्म ब्रह्माद।

साचा गाउँ साढे तिन्न तिन्न हाथ।
साचा पीण खाण अमृत रास।
साचा पिता पूत माउँ पुरख अबिनाश।
सच्चा सतिगुर साची टेक।
सतिजुग तेरा सच्चा जाप, दोए अक्खर रूप वटाईआ। सोहँ रूप वड प्रताप, करनी करता दए समझाईआ।
(१२ अस्सू २०२० बि)